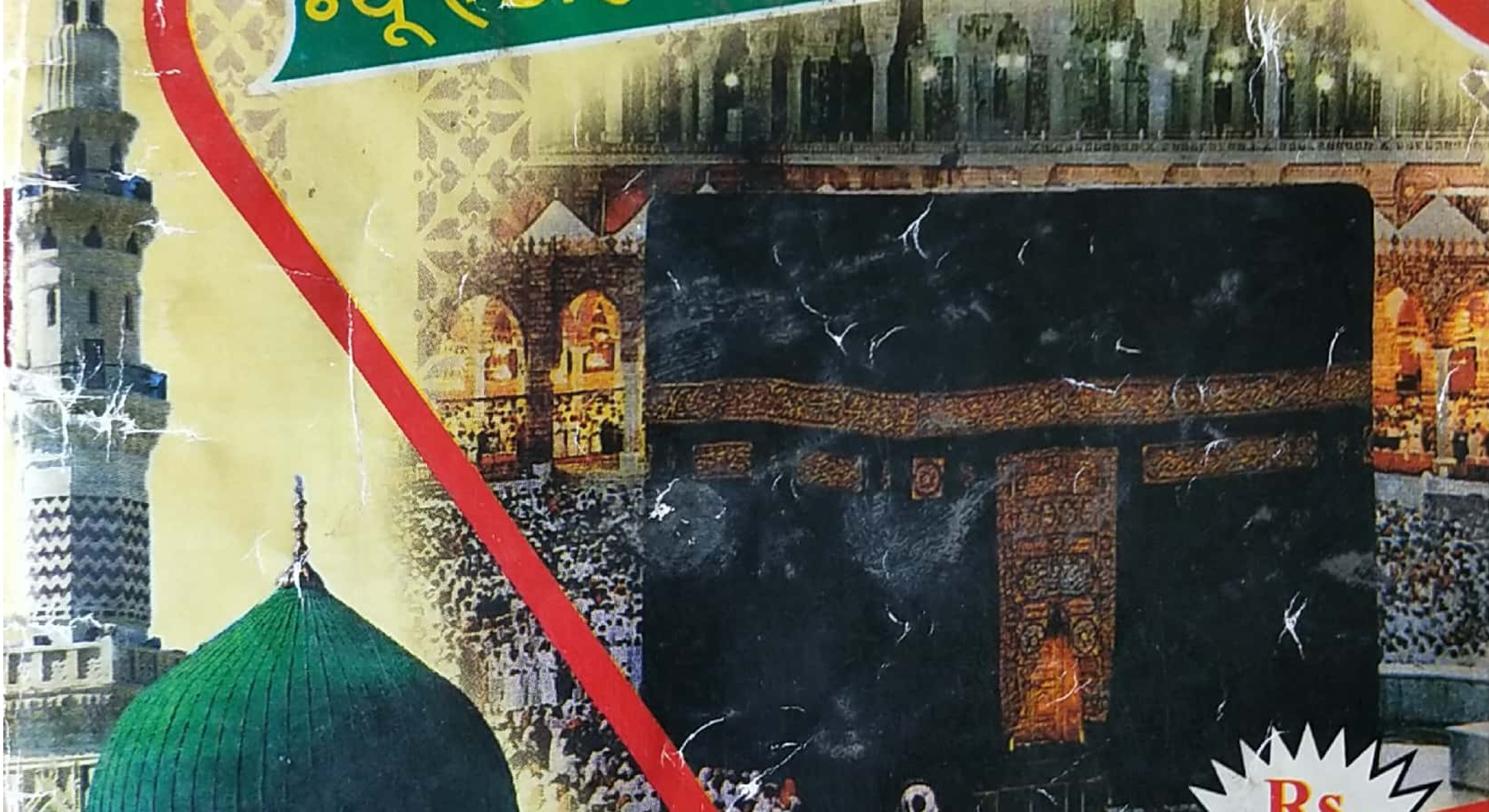
اذکار نماز

अज़कारे नमाज़

मअ् मस्नून दुआएँ

न्यू एडीशन نیوایڈیشن



Rs. 20/-

शाएकर्दा

बरकाती कुतुबख़ाना

इन्दौर, फोन : 0731-2453528

شائع کردہ

برکاتی کتب خانہ

नमाज़ की रकअतों की तादाद का नक़्शा

नाम	सुन्नतें	फ़राइज़	सुन्नतें	नवाफ़िल	वाजिबात	नवाफ़िल	टोटल
फ़ज्र	2	2	X	X	X	X	4
ज़ोहर	4	4	2	2	X	X	12
अस्र	4	4	X	X	X	X	8
मग़रिब	X	3	2	2	X	X	7
इशा	4	4	2	2	3	2	17
जुमा	4	2	4	2 सुन्नत	X	2	14
ईदैन	X	X	X	X	2	X	2
तरावीह	2	दो दो रकअत की निय्यत से पूरी करें।					20

फ़हरिस्ते मज़ामीन

कलिमे मअ् तर्जमे — 5
पाकी आधा ईमान है — 10
वुज़ू का तरीक़ा — 12
गुस्ल के फ़राइज़ — 14
गुस्ले जनाबत की निय्यत — 15
चन्द ज़रूरी मसाइल — 16
अज़ान — 18
अज़ान के बाद की दुआ — 20
निय्यते, पंजवक़्ता, जुमा व ईदैन — 20
नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा — 25
दस सूरतें — 26
रुकूअ़ व सज्दे का सही तरीक़ा — 30
नमाज़ के बाद की दुआ — 36
दुआए कुनूत — 36
तस्बीहे फ़ातिमा — 37
मर्द व औरत की नमाज़ का फ़र्क़ — 37
तरावीह की तस्बीह — 38
शराइते नमाज़ — 38
फ़राइज़े नमाज़ — 39
वाजिबाते नमाज़ — 40
आयतुल कुर्सी — 41
नमाज़े जनाज़ा — 41
मय्यत को मिट्टी देते वक़्त पढ़ें — 44
तरकीबे फ़ातिहा मुकम्मल — 45
बख़्शने का तरीक़ा — 51
दुरूदे ताज — 52
कुरबानी का तरीक़ा — 54
तकबीरे तशरीक़ — 56
दुआए अक़ीक़ा — 56

ईदैन की नमाज़ का तरीक़ा — 59
मस्नून दुआएँ मअ् तर्जमा — 60
खाने पीने का मस्नून तरीक़ा — 66
सोने का मस्नून तरीक़ा — 66
नूरानी लम्हात, यौमे आशूरा के फ़ज़ाइल — 68
नफ़्लों की निय्यत — 69
शबे आशूरा के नवाफ़िल — 69
नमाज़े यौमे आशूरा — 71
दुआए आशूरा — 71
मेअ़राज शरीफ़ — 78
नवाफ़िले शबे मेअ़राज — 78
शबे बरात की इबादात — 80
दुआए निस्फ़ शअ़बान — 82
शबे बरात के नवाफ़िल — 84
शबे बरात की फ़ातिहा व हल्वा — 85
शबे क़द्र की फ़ज़ीलत — 87
नवाफ़िले शबे क़द्र — 88
फ़ज़ाइले सलातुत्तस्बीह — 90
सूरए तकासुर, नस्र, क़द्र — 91
फ़र्ज़ियते नमाज़ — 94
फ़ज़ाइले नमाज़ — 95
तारिके नमाज़ पर वईदें — 97
फ़िक़ही मसाइल — 99
बीमार की नमाज़ का बयान — 100
मुसाफ़िर की नमाज़ का बयान — 101
क़ज़ाए उमरी का बयान — 103
ज़रूरी मालूमात — 105
एक ईमान अफ़रोज़ मुकालमा — 108
रात को सोते वक़्त के अमलियात — 111

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

पहला कलिमा तैय्यिब

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○

ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ○

तर्जमा : अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

दूसरा कलिमा शहादत

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ○

अशहदु अंल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वह दहु ला शरीका लहु व अश हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू ○

तर्जमा : मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

तीसरा कलिमा तम्जीद

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ○
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ○

सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलिय्यिल अज़ीम ○

तर्जमा : अल्लाह की ज़ात पाक है और तमाम तारीफ़ें उसी के लिये हैं और अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, और अल्लाह ही बड़ा है, उसकी मदद के बग़ैर किसी में ताक़त व क़ुव्वत नहीं, वह अज़मत और बुज़ुर्गी वाला है।

चौथा कलिमा तौहीद

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ط ذُو الْجَلَالِ
وَالْاِكْرَامِ بِيَدِهِ الْخَيْرُ ج وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह दहू ला शरीका लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युहयी व युमीतु व हुवा हय्युल ला यमूतु अबदन अबदा ज़ुल जलालि वल इकरामि ○ बियदिहिल ख़ैर व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर ○

तर्जमा : अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिये मुल्क है, और उसी के लिये तमाम तारीफ़ें, वही ज़िन्दगी और मौत देता है, वह ज़िन्दा है उसको मौत नहीं, वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा, वह जलाल और इकराम वाला है, उसी के दस्ते कुदरत में भलाई है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

पाँचवां कलिमा इस्तिग़फ़ार

اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَاءً
سِرًّا اَوْ عَلَانِيَةً وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ اَعْلَمُ
وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ لَا اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ
وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا
بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ○

अस्तग़फ़िरुल्लाहा रब्बी मिन कुल्लि ज़म्बिन अज़नब तुहू अमदन अव ख़ता अन सिर्रन अव अला नियतंव व अतूबु इलैहि मिनज़ ज़म्बिल लज़ी अअ़् लमु व मिनज़ ज़म्बिल लज़ी ला अअ़ लमु इन्नका अन्ता अल्लामुल ग़ुयूबि व सत्तारुल उयूबि व ग़फ़्फ़ारुज़ ज़ुनूबि वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीमि ०

तर्जमा : मग़फ़िरत चाहता हूँ अपने रब अल्लाह से, तमाम गुनाहों की, उन गुनाहों से जो मैंने जान कर किये या भूलकर किये, छुप कर किये या सबके सामने किये, और तौबह करता हूँ उन गुनाहों से जो मैं जानता हूँ और उन गुनाहों से जो मैं नहीं जानता। बेशक तू ग़ैबों का जानने वाला है और बुराइयों को छुपा ने वाला है और गुनाहों को बख़्शने वाला है और अल्लाह की मदद के बग़ैर किसी में ताक़त व कुव्वत नहीं, वह अज़मत और बुज़ुर्गी वाला है।

छटा कलिमा रद्दे कुफ्र

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّاَنَا
اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ
مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَالْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ
وَالنَّمِيْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِىْ كُلِّهَا
اَسْلَمْتُ وَاٰمَنْتُ وَاَقُوْلُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिन अन उशरिका बिका शै अंव व अना अअ़ लमु बिही व अस्तग़फ़िरुका लिमा ला अअ़लमु बिही तुब्तु अन्हु व तबर्रातु मिनल कुफ़रि वश शिरकि वल किज़बि वल ग़ीबति वल बिद अति वन नमी मति वल फ़वाहिशि वल बुहतानि वल मआसी

कुल्लिहा व अस्लमतु व आमन्तु व अक़ूलु ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह मांगता हूँ इस बात से कि किसी चीज़ को मैं तेरा शरीक बनाऊँ और मुझे उसका इल्म हो और मैंने माफ़ी मांगी तुझ से उस गुनाह की जिसका मुझे इल्म नहीं, और मैं बेज़ार हुआ कुफ्र से और शिर्क से और झूट से और ग़ीबत से और बिदअत से और चुग़ली से और बेहयाई के कामों से और तोहमत लगाने से और हर क़िस्म की ना फ़रमानियों से और तस्लीम किया मैंने और ईमान लाया मैं और कहता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

ईमाने मुजमल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَائِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ اِقْرَارٌ م بِاللِّسَانِ وَتَصْدِيْقٌ بِالْقَلْبِ ○

आमन्तु बिल्लाहि कमा हुवा बि असमाइही व सिफ़ातिही व क़बिलतु जमीआ अहकामिही इक़रारुम बिल लिसानि व तस्दीकुम बिल क़ल्ब ○

तर्जमा : ईमना लाया मैं अल्लाह पर जैसा कि वह अपने नामों और सिफ़तों के साथ है और कुबूल किये मैंने उसके

तमाम अहकाम इक़रार करता हूँ ज़बान से और तस्दीक़ करता हूँ दिल से।

ईमाने मुफ़स्सल

اٰمَنْتُ بِاللهِ وَمَلٰئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ٥

आमन्तु बिल्लाहि व मलाइ कतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल यौमिल आख़िरि वल क़दरि ख़ैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि तआला वल बअसि बअ़दल मौत ०

तर्जमा : ईमान लाया मैं अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसके रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर और इस बात पर कि तक़दीर अच्छी या बुरी ख़ुदाए तआला की तरफ़ से होती है और मौत के बाद उठाए जाने पर।

पाकी

हमारे आक़ा व मौला हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जिस बात पर सबसे ज़्यादा ज़ोर दिया है वह है पाकी।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीम यह है कि ज़ाहिर भी पाक रखो और बातिन भी पाक रखो।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया है, अल्लाह महब्बत करता है उनसे जो अच्छी तरह पाक रहते हैं।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है अल्लाह पाक है और पाकी को पसन्द फ़रमाता है।

हमारे आक़ा व मौला हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **पाकी आधा ईमान है।**

लिहाज़ा हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि ज़ाहिर भी पाक साफ़ रखे और बातिन भी पाक साफ़ रखे, ज़ाहिर की सफ़ाई का असर बातिन पर पड़ता है। इस लिये नमाज़ से पहले वुज़ू करना फ़र्ज़ है।

ज़ाहिर की पाकी से यह मतलब है कि हमारा बदन पाक हो, हाथ मुंह पाक और साफ़ हों, कपड़े पाक और साफ़ हों वह पानी पाक हो जिसको इस्तिमाल करो। वग़ैरह वग़ैरह।

बातिन की सफ़ाई यह है कि कुफ्र शिर्क बुरे अक़ीदों बुरे ख़यालात घमण्ड, तकब्बुर किसी को देख कर जलना और लालच जैसी बुरी बातों से दिल साफ़ होना।

नापाक चीज़ गन्दी होती है, उससे घिन आती है, उससे तन्दुरुस्ती भी ख़राब होती है, लिहाज़ा अगर कोई नापाक चीज़ कपड़े या बदन पर लग जाए तो उसको फ़ौरन पाक कर लो।

पाक करने का तरीक़ा यह है कि पाक पानी से तीन बार धो लो जब धोना शुरू करो तो बिस्मिल्लाह कहो, हर बार पानी डाल कर ख़ूब निचोड़ो।

(तफ़सील के लिये बहारे शरीअत वग़ैरह देखो)

वुज़ू का तरीक़ा

بِسْمِ اللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى دِيْنِ الْاِسْلَامِ ٥

नियत : बिस्मिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम वल हम्दु लिल्लाहि अला दीनिल इस्लाम ०

ऊंची जगह क़िब्ला रू बैठे, पाकी हासिल करने और सवाब हासिल करने की नियत करे, और बिस्मिल्लाह पढ़े (जो वुज़ू बिस्मिल्लाह से शुरू किया जाए तमाम बदन के गुनाहों से पाक कर देता है) पहले तीन बार गट्टों तक दोनों हाथ धोये फिर तीन बार मिस्वाक करे (मिस्वाक किया हुआ वुज़ू सत्तर दर्जा फ़ज़ीलत रखता है) फिर तीन बार इस तरह कुल्ली करे कि मुंह की तमाम जड़ों और दांतों की सब खिड़कियों में पानी पहुँच जाए (वुज़ू में इसी तरह कुल्ली करना सुन्नते मुअक्कदह है) रोज़ा न हो तो ग़रारह भी करे फिर तीन बार नाक में नर्म बांसे तक पानी चढ़ाएं (यह सुन्नते मुअक्कदह है) फिर तीन बार मुंह धोएं, लम्बाई में शुरू पैशानी से ठोड़ी के नीचे तक और चौड़ाई में एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक, हर रोंगटे पर पानी बह जाए, फिर दोनों हाथ पहले सीधा फिर उल्टा कोहनियों समेत इस तरह धोये कि नाख़ुनों से लेकर कोहनियों समेत हर जगह पानी बह जाए फिर सर का मसह यूँ करे कि पैशानी के बालों से दोनों हाथों की तीन उंगलियाँ फेरता हुआ गुद्दी तक ले जाए और फिर गुद्दी से हथेलियाँ फेरता हुआ वापस लाए

फिर शहादत की उंगली से कान के अंदरूनी हिस्सा और अंगूठे के पेट से कान के बाहरी हिस्सा और उंगलियों की पुश्त से गर्दन का मसह करे, फिर तीन बार दोनों पाँव पहले दायां फिर बायां टख़्नों तक बाएं हाथ से धोए और उंगलियों का ख़िलाल करें।

फ़ायदा : हर उज़्व (हिस्से) को तीन तीन मरतबा धोने का मतलब यह है कि हर उज़्व के बाल बाल और हर रोंगटे पर तीन तीन मरतबा पानी बह जाए, कोई रोंगटा ख़ुश्क न रह जाए अगर कोई उज़्व तीन बार पानी डालने पर न धुल सके तो मज़ीद (ज़्यादा) बार धो सकते हैं, क्यों कि तीन बार पानी डालना मक़सद नहीं बल्कि धोना अस्ल मक़सद है, इसी तरह कुल्ली करते वक़्त इस बात का इत्मीनान ज़रूरी है कि मुंह साफ़ हो गया या नहीं, पान वग़ैरह खाने या बीड़ी सिगरेट पीने के बाद अगर तीन मरतबा से ज़्यादा कुल्ली करना पड़े तो कर सकता है।

तम्बीह : अकसर देखा जाता है कि तीन बार कुल्ली करने के बजाए जल्दी जल्दी तीन बार थोड़ा थोड़ा पानी मुँह में लेकर पिचपिच कर लिया और नाक में पानी चढ़ाने के बजाए नाक की नोक पर तीन बार पानी लगा लिया करते हैं यह ख़िलाफ़े सुन्नत है और इसका आदी गुनाहगार है। इसी तरह मिस्वाक न हो तो दांतों पर उंगली फेरें और नाक में पानी चढ़ाते वक़्त उल्टे हाथ की छोटी उंगली नाक में डाले और नाक साफ़ करे, इसी तरह मसह करते वक़्त

लापरवाही के साथ सिर्फ़ उंगलियों के सिरे बालों पर फेर लेते हैं, ताकि बाल न बिगड़े, न बिखरे यह भी ग़लत है चौथाई सर का मसह फ़र्ज़ है अगर इसमें कमी हो गई तो वुज़ू ही नहीं हुआ और जब वुज़ू ही नहीं तो नमाज़ भी नहीं। इसी तरह वुज़ू करने के बाद बाज़ लोग हाथ मुंह तोलिया या रुमाल से रगड़ रगड़ के बिल्कुल ख़ुश्क कर लेते हैं यह भी ग़लत है, पोंछने का मक़सद यह है कि आज़ाए वुज़ू से मस्जिद के फ़र्श पर पानी के क़तरे न टपके, चाहिये तो यह कि आज़ाए वुज़ू पर कुछ तरी बाक़ी छोड़े कि रोज़े महशर नेकियों के पल्ले में रखी जाएगी।

वुज़ू में चार फ़र्ज़ हैं

(1) चेहरा धोना (2) दोनों हाथ कोहनियों समेत धोना (3) चौथाई सर का मसह करना (4) दोनों पांव टख़्नों समेत धोना।

ग़ुस्ल में तीन फ़र्ज़ हैं

(1) कुल्ली करना, इस तरह कि मुंह की तमाम जड़ों और दांतों की तमाम ख़िड़कियों में होंठों से हलक़ की जड़ तक हर हिस्से पर पानी बह जाए।

(2) नाक में नर्म बांसे तक पानी चढ़ाना इस तरह कि सीधे हाथ के चुल्लु में पानी लें और नाक के ज़रीए हल्का सा सांस खींचकर नर्म बांसे तक पानी चढ़ाये और उल्टे

हाथ की छोटी उंगली नाक में डाले और नाक साफ़ करे।

(3) पूरे बदन पर पानी बहाना इस तरह कि सर के बालों से लेकर पैरों के तलवों तक बदन के हर रोंगटे व बाल पर पानी बह जाए।

ग़ुस्ले जनाबत की नियत

نَوَيْتُ اَنْ اَغْتَسِلُ مِنْ غُسْلِ الْجَنَابَةِ لِرَفْعِ الْحَدَثِ

بِحَقِّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ ○

नवैतु अन अग़ तसिलु मिन ग़ुस्लिल जना बति ले र फ़ इल हदसि ०

वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें

पाख़ाना या पैशाब के मक़ाम से किसी चीज़ का निकलना, हवा ख़ारिज होना। ख़ून या पीप का कहीं से निकल कर अपनी जगह से बह जाना, दुख़्ती आँख से पानी का बहना, मुंह भर क़ै (उल्टी) आना (मुंह भर का यह मतलब है कि उसे बै तकल्लुफ़ न रोक सकता हो) सहारा या लेटकर सो जाना किसी वजह से बेहोश हो जाना, बालिग़ का रुकू व सुजूद वाली नमाज़ में क़हक़हा मारना (इतनी आवाज़ से हंसना कि आस पास वाले सुन ले)

चन्द ज़रूरी मसाइल

मस्अला : बदन के किसी मक़ाम से ख़ून या पीप निकला और सिर्फ़ चमका या उभरा तो वुज़ू रहेगा, यूँ ही मुंह से ख़ून निकला और थूक का रंग सुर्ख़ हो गया तो वुज़ू जाता रहा और अगर ज़र्द (पीला) है तो वुज़ू बाक़ी रहेगा।

मस्अला : घुटना या सतर ख़ुलने या नंगा होने या किसी को नंगा देखने से वुज़ू नहीं टूटता। इसी तरह गाली बकने या बेहयाई की बात करने या झूट बोलने या ग़ीबत करने से भी वुज़ू नहीं जाता। (हाँ वुज़ू कर ले तो बहतर है) यह सब काम वुज़ू के अलावा भी गुनाह है और वुज़ू की हालत में और ज़्यादा गुनाह है।

मस्अला : ऊँघने या बैठे बैठे झोंके लेने से वुज़ू नहीं टूटता हां सहारा या टेक लगाकर सो जाने से वुज़ू जाता रहा।

मस्अला : अगर हाथ में या उंगलियों में अंगूठी छल्ले या चूड़ियाँ पहन रखी हो और अगर इतने तंग हों कि बग़ैर उतारे पानी नहीं बहेगा तो उतारना ज़रूरी वरना हिला जुला कर पानी बहा लें।

मस्अला : मर्दों के लिये सिर्फ़ चाँदी की साढ़े चार माशा से कम की एक नग की एक अंगूठी पहनना जाइज़ है, इस के अलावा हर धात ताँबा, पीतल, स्टील या चाँदी व सोने का कोई और ज़ेवर मर्दों के लिये हराम है। हाँ मां बहनें चाँदी व सोने के ज़ेवरात पहन सकती हैं, दूसरी धात उनको भी हराम है।

तम्बीह : बाज़ लोगों को ताम्बा, पीतल, स्टील के छल्ले या कड़े और अंगूठी पहने देखा जाता है और उनको मस्अला बताया जाए तो कहते हैं कि साहब इस पर तो अल्लाह का कलाम लिखा हुआ है। यह तो मैंने फलां मर्ज़ के लिये पहन रखा है और कोई कहता है कि यह तो फलां बाबा या पीर साहब ने मतर कर दिया है, यह निरी जहालत है। ऐसा कोई मन्तर या आयत और दुआ नहीं जो हराम धात को हलाल कर दे और जो चीज़ शरीअत ने हराम कर दी उसे कोई बाबा या पीर फ़क़ीर हलाल नहीं कर सकते। जो इस क़िस्म के हथ कण्डे इस्तेमाल करे वह ढोंगी तो हो सकता है, पीर फ़क़ीर नहीं। क्यों कि पहले शरीअत फिर तरीक़त। ख़ुदा हम सबको नेक समझ अता फ़रमाए। आमीन।

तम्बीह : आज कल बद क़िस्मती से मादर पिदर आज़ाद मग़रबी तहज़ीब की हवा में बह कर मुसलमान भी बनाओ सिंघार और फ़ैशन में किसी से पीछे नहीं हैं और ऐसे अन्धे हो गए हैं कि जाइज़ नाजाइज़ हलाल व हराम की भी परवाह नहीं करते, ख़ास तौर से मां बहनें तो ख़ुदा की पनाह। अल्लाह नेक हिदायत दे।

मिसाल के तौर पर नाख़ुन पालिश ही को ले लीजिये, इसके बग़ैर तो मां बहनें अपना मेकअप ही अधूरा समझती हैं। और यह नेल पॉलिश इतनी सख़्त होती है कि बग़ैर छुड़ाए नाख़ुनों पर पानी नहीं बह सकता। इस लिये नेल पॉलिश छुड़ाकर धोना ज़रूरी है। वर्ना वुज़ू नहीं होगा। इसी तरह

ग़ुस्ल में भी ख़याल रखा जाए वरना पाकी हासिल नहीं होगी।

हां मां बहनें मेहंदी इस्तेमाल कर सकती हैं, क योंकि यह सख़्त नहीं होती और मर्दों के लिये तो मेहंदी भी हराम है।

तम्बीह : बाज़ लोगों को देखा गया है कि मस्जिद में खम्बे या दीवार वग़ैरह का सहारा लेकर बैठते हैं और कभी कभी ऊंघ भी लेते हैं। जिससे वुज़ू टूटने का ख़तरा रहता है और मस्जिद में सहारा लगाकर बैठना बेअदबी है। हां ज़ईफ़ व कमज़ोर हो तो मजबूरी है लेकिन मैंने कुछ जवानों को देखा है कि मस्जिद में ऐसी जगह बैठने की कोशिश करेंगे जहाँ सहारा मिल सके, यह मस्जिद की बेअदबी है। मस्जिद ख़ुदा का घर है अदब का मुक़ाम है।

अज़ान

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ○ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ○

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ○

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○

حَیَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ○ حَیَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ○

حَیَّ عَلَى الْفَلَاحِ ○ حَیَّ عَلَى الْفَلَاحِ ○

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ○ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ○

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर । अशहदु अंल्लाइलाहा इल्लल्लाहु, अशहदु अंल्लाइलाहा इल्लल्लाहु । अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह, अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह । हय्या अलस्सलाह, हय्या अलस्सलाह । हय्या अलल फ़लाह, हय्या अलल फ़लाह । अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर । ला इलाहा इल्लल्लाहु 0

फ़ज्र की अज़ान में हय्या अलल फ़लाह के बाद दो बार **अस्सलातु ख़ैरुम मिनन नौम 0 कहे ।**

नोट : इक़ामत के अलफ़ाज़ अज़ान के मिस्ल हैं, इक़ामत में हय्या अलल फ़लाह के बाद दो बार **क़दक़ा मतिस्सलाह** भी कहे । अज़ान व इक़ामत दोनों की इजाबत है यानी सुनने वाला भी वही कलिमात कहता जाए और अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह पर अंगूठों को चूम कर आँखों से लगाए और पहली बार सल्लल्लाहु अलैका या रसूलल्लाह और दूसरी बार क़ुर्रतु ऐनी बिका या रसूलल्लाह अल्लाहुम्मा मत्तिअनी बिस्सम्ए वल बसरि कहे । हय्या अलस्सलाह और हय्या अलल फ़लाह के जवाब में ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह कहे और बहतर यह है कि दोनों कहे और फ़ज्र की अज़ान में अस्सलातु ख़ैरुम मिनन नौम के जवाब में सदक़्ता व बररता बिल हक़्क़ि नतक़्ता कहे और तकबीर में क़दक़ा मतिस्सलाह के जवाब में अक़ाम हल्लाहु व अदा महा कहे।

अज़ान के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ
اٰتِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ
الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَنِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا
شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ○

अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़िहिद दअ़वतित ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति सैयिदिना मुहम्मदा निल वसीलता वल फ़दीलता वद्दरजतर रफ़ीअता वबअस्हु मक़ामम महमूदा निल्लज़ी व अत्तहू वर ज़ुक़्ना शफ़ाअतहू यौमल क़ियामति इन्नका ला तुख़लिफ़ुल मीआद ○

नियतें

नमाज़े फज्र की दो सुन्नत की निय्यत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ सुन्नत की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त फ़ज्र का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर।

नमाज़े फ़ज्र के दो फ़र्ज़ की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ फ़र्ज़ की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त फ़ज्र का, (पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

नमाज़े ज़ोहर की चार सुन्नत की नियत

नियत की मैंने चार रकअत नमाज़ सुन्नत की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त ज़ोहर का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर।

नमाज़े ज़ोहर के चार फ़र्ज़ की नियत

नियत की मैंने चार रकअत नमाज़ फ़र्ज़ की वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त ज़ोहर का, (पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर।

ज़ोहर की दो सुन्नत की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ सुन्नत की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त ज़ोहर का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर।

ज़ोहर की दो नफ़्ल की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ नफ़्ल की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त ज़ोहर का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर।

अस्र की चार सुन्नत की नियत

नियत की मैंने चार रकअत नमाज़ सुन्नत की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त अस्र का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर

अस्र की चार फ़र्ज़ की नियत

नियत की मैंने चार रकअत नमाज़ फ़र्ज़ की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त अस्र का (पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर।

मग़रिब के तीन फ़र्ज़ की नियत

नियत की मैंने तीन रकअत नमाज़ फ़र्ज़ की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त मग़रिब का, (पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर।

मग़रिब की दो सुन्नत की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ सुन्नत की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त मग़रिब का मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

मग़रिब की दो नफ़्ल की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ नफ़्ल की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त मग़रिब का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

इशा की चार सुन्नत की नियत

नियत की मैंने चार रकअत नमाज़ सुन्नत की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त इशा का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

इशा के चार फ़र्ज़ की नियत

नियत की मैंने चार रकअत नमाज़ फ़र्ज़ की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त इशा का (पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबंर।

इशा की दो सुन्नत की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ सुन्नत की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त इशा का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

इशा की दो नफ़्ल की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ नफ़्ल की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त इशा का मुंह, मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

तीन वित्र वाजिब की नियत

नियत की मैंने तीन रकअत नमाज़ वित्र वाजिब की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त इशा का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

इशा के दो नफ़्ल की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ नफ़्ल की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त इशा का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

जुमे की नमाज़ की नियतें

चार सुन्नत की नियत

नियत की मैंने चार रकअत नमाज़ सुन्नत की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त जुमे का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

दो फ़र्ज़ की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ फ़र्ज़ की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त जुमे का, पीछे इस इमाम के, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

चार सुन्नत की नियत

नियत की मैंने चार रकअत नमाज़ सुन्नत की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त जुमे का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

दो सुन्नत की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ सुन्नत की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त जुमे का मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

दो नफ़्ल की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ नफ़्ल की, वास्ते अल्लाह तआला के, वक़्त जुमे का, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

ईदैन की नमाज़ की नियत

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ वाजिब ईदुल फ़ित्र (या ईदे अज़्हा) की मय ज़ाइद 6 तकबीरों के, वास्ते अल्लाह तआला के, पीछे इस इमाम के, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर।

नोट : ईदैन की नमाज़ का तरीक़ा **(पेज नं. 59 पर देखें।)**

पंजवक़्ता नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

सना

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ
وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ○

क़याम : सुब्हाना कल्ला हुम्मा व बिहम्दिका व तबारा कस्मुका व तआला जद्दुका वला इलाहा ग़ैरुका ○

तअव्वुज़

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम ○

तस्मियह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

सूरए फ़ातिहा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ
الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ط
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○ اٰمِيْن ○

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन 0 अर्रहमा निर्रहीम 0 मालिकि यौमिद्दीन 0 इय्याका नअ़बुदु व इय्याका नस्तईन 0 इहदिनस सिरातल मुस्तक़ीमा 0 सिरातल लज़ीना अन अम्ता अलैहिम ग़ैरिल मग़दूबि अलैहिम वलद्दाल्लीन 0 (आमीन)

सूरए फ़ील

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

اَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصۡحٰبِ الۡفِيۡلِ ○ اَلَمۡ يَجۡعَلۡ كَيۡدَهُمۡ فِىۡ تَضۡلِيۡلٍ ○ وَّاَرۡسَلَ عَلَيۡهِمۡ طَيۡرًا اَبَابِيۡلَ ○ تَرۡمِيۡهِمۡ بِحِجَارَةٍ مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ○ فَجَعَلَهُمۡ كَعَصۡفٍ مَّاۡكُوۡلٍ ○

अलम तरा कैफ़ा फ अ़ला रब्बुका बि अस्हाबिल फ़ील अलम यजअल कैदाहुम फी तदलीलिंव व अरसला अलैहिम तैरन अबाबील, तरमीहिम बि हिजारतिम मिन सिज्जीलिन फ़जाअलाहुम क असफ़िम मअकूल 0

नोट : अलम तरा पढ़े या नीचे लिखी सूरतों में से जो सूरह याद हो पढ़ें, तरतीब व छोटी बड़ी का ख़याल रखें।

सूरए कुरैश

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

لِاِيۡلٰفِ قُرَيۡشٍ اِلٰفِهِمۡ رِحۡلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيۡفِ ○ فَلۡيَعۡبُدُوۡا رَبَّ هٰذَا الۡبَيۡتِ الَّذِىۡۤ اَطۡعَمَهُمۡ مِّنۡ جُوۡعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمۡ مِّنۡ خَوۡفٍ ○

लि ईलाफ़ि कुरैशिन ईलाफ़िहिम रिहलतश शिताइ वस्सैफ़ ० फ़ल यअ़ बुदु रब्बा हाज़ल बैतिल लज़ी अत अमा हुम, मिन जूइंव व आमना हुम मिन ख़ौफ़ ०

सूरए माऊन

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

اَرَءَيۡتَ الَّذِىۡ يُكَذِّبُ بِالدِّيۡنِ ○ فَذٰلِكَ الَّذِىۡ يَدُعُّ
الۡيَتِيۡمَ ○ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الۡمِسۡكِيۡنِ ○ فَوَيۡلٌ
لِّلۡمُصَلِّيۡنَ ○ الَّذِيۡنَ هُمۡ عَنۡ صَلَاتِهِمۡ سَاهُوۡنَ ○ الَّذِيۡنَ
هُمۡ يُرَآءُوۡنَ وَيَمۡنَعُوۡنَ الۡمَاعُوۡنَ ○

अराऐतल लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन ० फ़ज़ालिकल लज़ी यदुअ़ उल य़तीम ० वला यहुद्दु अला तआमिल मिस्कीन ० फ़वैलुल लिल मुसल्लीनल लज़ीना हुम अन सलातिहिम साहूनल्लज़ीना हुम युराऊ ना व यम नऊनल माऊन ०

सूरए कौसर

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

اِنَّاۤ اَعۡطَيۡنٰكَ الۡكَوۡثَرَ ○ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانۡحَرۡ ○
اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الۡاَبۡتَرُ ○

इन्ना अअ़तैना कल कौसर ० फ़सल्लि लि रब्बिका वनहर ० इन्ना शानि अका हुवल अबतर ०

सूरए काफ़िरून

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ○ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ○ وَلَاۤ
اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ○ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ○ وَلَاۤ
اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ○ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ○

कुल या अय्युहल काफ़िरूना 0 ला अअ़बुदु मा तअ़बुदून 0 वला अन्तुम आबिदुना मा अअ़बुद 0 वला अना आबिदुम मा अबत्तुम 0 वला अन्तुम आबिदूना मा अअ़बुद 0 लकुम दीनुकुम वलियदीन 0

सूरए नस्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ○ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ
فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ○ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ط
اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ○

इज़ा जा अ नसरुल्लाहि वल फ़तहु वराऐतन नासा यदख़ुलू ना फ़ी दीनिल्लाहि अफ़वाजा 0 फ़सब्बिह बिहम्दि रब्बिका वस्तग़ फ़िरहु इन्नहु काना तव्वाबा 0

सूरए लहब

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

تَبَّتْ يَدَاۤ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ○ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ○

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ○ وَّامْرَاَتُهٗ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ○
فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ○

तब्बत यदा अबी लहबिंव व तब्ब 0 मा अग़्ना अन्हु मालुहू वमा कसब 0 सयस्ला नारन ज़ाता लहबिंव वमरा अतुहू हम्मा लतल हतब 0 फ़ी जीदिहा हब्लुम मिम मसद0

सूरए इख़्लास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ يَلِدْ ○ وَلَمْ يُوْلَدْ ○
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

कुल हुवल्लाहु अहद 0 अल्लाहुस्समद 0 लम यलिद व लम यूलद 0 वलम यकुल्लहू कुफुवन अहद 0

सूरए फ़लक़

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ○ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ
اِذَا وَقَبَ ○ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ○ وَمِنْ شَرِّ
حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ○

कुल अऊज़ु बि रब्बिल फ़लक़ 0 मिन शर्रि मा ख़लक़ 0 वमिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब 0 व मिन शर्रिन नफ़्फ़ा साति फ़िल उक़द 0 व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद 0

सूरए नास

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۝

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِکِ النَّاسِ ۝ اِلٰہِ النَّاسِ ۝
مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ الۡخَنَّاسِ ۝ الَّذِیۡ یُوَسۡوِسُ
فِیۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۝ مِنَ الۡجِنَّۃِ وَ النَّاسِ ۝

कुल अऊज़ु बि रब्बिन नासि मलिकिन नासि इला हिन्नासि 0 मिन शर्रिल वस वासिल ख़न्ना सिल्लज़ी युवस विसु फ़ी सुदू रिन्नासि मिनल जिन्नति वन्नास 0

•

रुकूअ की तस्बीह

कम से कम तीन बार कहे -

सुब्हाना रब्बियल अज़ीम 0 سُبۡحَانَ رَبِّیَ الۡعَظِیۡمِ ۝

तर्जमा : पाक है मेरा परवर दिगार अज़मत वाला।

तस्मीअ़

समिअल्लाहु लिमन हमिदह 0 سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنۡ حَمِدَہٗ ۝

तर्जमा : अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की।

तहमीद

रब्बना लकल हम्द 0 رَبَّنَا لَکَ الۡحَمۡدُ ۝

तर्जमा : ऐ हमारे परवर दिगार सब तारीफ़ें तेरे ही लिये हैं

नोट : रुकू करके सीधा ख़ड़ा हो जाए और दोनों हाथ छोड़ कर खड़ा हो और मुक़्तदी (जमाअत से पढ़ने वाला) सिर्फ़ तहमीद यानी रब्बना लकल हम्द कहे और तन्हा नमाज़ पढ़ने वाला तस्मीअ़ (समिअल्लाहु लिमन हमिदह) और तहमीद (रब्बना लकल हम्द) दोनों कहे।

सज्दे की तस्बीह

कम से कम तीन बार कहे - سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى ۝

सुब्हाना रब्बियल अअ़ला ०

तर्जमा : पाक है मेरा परवर दिगार बहुत बलन्द।

रुकू और सज्दे का सही तरीक़ा

अल्लाहु अकबर कहता हुआ रुकू में जाए और घुटनों को हाथ की उंगलियों से मज़बूत पकड़ ले घुटनों पर उंगलियों को फैला कर रखे और इतना झुके कि सर और कमर बराबर हो जाए और कम से कम तीन बार रुकू की तस्बीह इत्मीनान के साथ पढ़े। सुब्हाना रब्बियल अज़ीम कहे, रुकू में निगाह पैरों के अंगुठों पर रखे।

क़ौमा : फिर दोनों हाथ छोड़ कर सीधा खड़ा हो जाएं और इत्मीनान के साथ तस्मीअ़ (**समिअल्लाहु लिमन हमिदह**) और तहमीद (**रब्बना लकल हम्द**) कहे और इमाम के पीछे हो तो सिर्फ़ **रब्बना लकल हम्द** कहे फिर अल्लाहु

अकबर कहता हुआ सज्दे में जाए इस तरह कि पहले घुटने फिर दोनों हाथ ज़मीन पर रखें फिर नाक और फिर पैशानी ख़ूब जमाए, और चहरा दोनों हाथों के दर्मियान रखे और मर्द बाज़ुओं को करवटों से और पेट को रानों से और रानों को पिन्डलियों से जुदा रखे और कोहनियाँ ज़मीन से उठी हुई हो और दोनों पांव की उंगलियों के पेट क़िब्ला रुख़ ज़मीन पर जमे हुए हों और कम से कम तीन बार सज्दे की तस्बीह सुब्हाना रब्बियल अअ़ला पढ़े।

जल्सा : फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सज्दे से इस तरह उठें कि पहले पैशानी फिर नाक फिर हाथ उठे और बायां क़दम बिछा कर उस पर बैठे और दाहिना क़दम खड़ा करके रखे कि उसकी उंगलियाँ क़िब्ला रुख़ हो और हाथ रानों पर घुटनों के क़रीब रखें कि हाथ की उंगलियाँ भी क़िब्ला रुख़ हो फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ इसी तरह दूसरा सज्दा करे, फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ दूसरी रकअ़त के लिये खड़ा हो।

क़याम : बिस्मिल्लाह और सूरए फ़ातिहा और कोई सूरत पढ़ कर इसी तरह रुकू व सुजूद करे, लेकिन इमाम के पीछे मुक़्तदी बिस्मिल्लाह और सूरए फ़ातिहा और सूरह नहीं पढ़ेगा।

क़अदह : दूसरी रकअत के दोनों सज्दों से फ़ारिग़ होकर उसी तरह बैठ जाए, जिस तरह दो सज्दों के दरमियान बैठा था, और अत्तहिय्यात पढ़े।

चाहे यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ

اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِىْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِىْ

اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ○

अल्लाहुम्मा इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन कसीरंव वला यग़फ़िरुज़्ज़ुनूबा इल्ला अन्ता फ़ग़फ़िरली मग़फ़िरतम मिन इनदिका वर हमनी इन्नका अन्तल ग़फ़ूरुर्रहीम ०

फिर दोनों तरफ़ सलाम फेरे, पहले दाएं फिर बाएं।

सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ ط

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि ०

दाहिनी तरफ़ के सलाम में दाहिनी तरफ़ के फ़रिश्तों और नमाज़ियों क़ी नियत करे, कि मैं इनको सलाम कह रहा हूँ और बाईं तरफ़ के सलाम में बाईं तरफ़ के फ़रिश्तों और नमाज़ियों की नियत करे, और जिस तरफ़ इमाम हो उस तरफ़ के सलाम में इमाम की भी नियत करें और इसी तरह इमाम भी दोनों तरफ़ के सलामों में फ़रिश्तों और मुक़्तदियों की नियत करे और जब तन्हा हो तो दोनों तरफ़ के फ़रिश्तों की नियत करे। **(बहारे शरीअत, हि. 3, स. 90)**

नोट : नियत दिल के इरादे का नाम है ज़बान से यहाँ न कहे।

नमाज़ के बाद की दुआ

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ ط وَمِنْكَ السَّلَامُ ط وَاِلَيْكَ يَرْجِعُ السَّلَامُ ط حَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ ط وَاَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ ط تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ط

अल्लाहुम्मा अन्तस सलामु व मिनकस सलामु व इलैका यरजिउस सलाम, हय्यिना रब्बना बिस्सलाम, व अदख़िल्ना दारस सलाम, तबारकता रब्बना व तआलैता या ज़ल जलालि वल इकराम ०

दुआए कुनूत

वित्र की तीसरी रकअत में रुकूअ से पहले क़याम में पढ़े

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَ نُثْنِىْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ ط وَ نَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَ نَخْلَعُ وَ نَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ط اَللّٰھُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى ط وَنَحْفِدُ وَ نَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَ نَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ○

अल्लाहुम्मा इन्ना नसतईनुका व नस तग़फ़िरुका वनूमिनु बिका व न तवक्कलु अलैका वनुस्नी अलैकल ख़ैर व नश कुरू का वला नकफुरूका व नख़लउ व नतरुकू

तशह्हुद

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰہِ وَالصَّلٰوتُ وَالطَّیِّبٰتُ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ
اَیُّهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی
عِبَادِ اللّٰہِ الصَّالِحِیْنَ ○ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰہُ
وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ○

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्सलावातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलैका अय्युहन नबिय्यु वरहमतुल्लाहि व बरकातुहू अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन ० अशहदु अंल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहु ०

जब तशह्हुद में कलिमा **ला** पर पहुँचे तो दाहिने हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का हल्का बनाए और लफ़्ज़े **ला** पर कलिमे की उंगली उठाए और **इल्लल्लाहु** पर गिरा दे और सब उंगली फ़ौरन सीधी कर ले, अगर दो रकअत वाली नमाज़ है तो फिर अत्तहिय्यात के बाद दुरूद शरीफ़ और दुआ पढ़कर सलाम फेर दे और अगर तीन या चार रकअत वाली नमाज़ है तो अत्तहिय्यात के बाद अल्लाहु अकबर कहकर खड़ा हो जाए, और दोनों रकअतों में अगर फ़र्ज़ हो तो सिर्फ़ बिस्मिल्लाह और सूरए फ़ातिहा पढ़कर क़ाएदे के मुताबिक़ रुकू व सुजूद करे, अगर सुन्नत व नफ़्ल हो तो बिस्मिल्लाह, सूरए फ़ातिहा और कोई सूरत या कम

से कम तीन छोटी आयतें या एक बड़ी आयत जो तीन छोटी आयतों के बराबर हो पढ़े, लेकिन इमाम के पीछे मुक़्तदी बिस्मिल्लाह और सूरए फ़ातिहा नहीं पढ़ेगा, वह ख़ामोश खड़ा रहेगा फिर तीन या चार रकअतें पूरी करके बैठ जाए और अत्तहिय्यात और दुरूद शरीफ़ और दुआ पढ़े और सलाम फेर दे।

दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैता अ़ला इबराहीमा व अ़ला आलि इबराहीमा इन्नका हमीदुम मजीद ०

अल्लाहुम्मा बारिक अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अ़ला इब्राहीमा व अ़ला आलि इबराहीमा इन्नका हमीदुम मजीद ०

अल्लाहुम्मा रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया ह स न तंव व फ़िल आख़िरति ह स न तंव व क़िना अज़ाबन्नार ० पढ़ें।

और सीना क़िब्ले की तरफ़ हो। (5) वक़्त यानी नमाज़ का वक़्त पर पढ़ना। (6) नियत करना, दिल के पक्के इरादे का नाम निय्यत है, ज़बान से कह लेना मुस्तहब है।

फ़ायदा : नमाज़ शुरू करने से पहले इन शर्तों का होना ज़रूरी है वरना नमाज़ नहीं होगी।

फ़राइज़े नमाज़

नमाज़ के फ़राइज़ सात हैं। (1) तकबीरे तहरीमा यानी अल्लाहु अकबर कहना। (2) क़याम यानी सीधे खड़े होकर नमाज़ पढ़ना। सही उज़्र के बग़ैर अगर नमाज़ें बैठ कर पढ़ेगा तो नहीं होगी। नफ़्ल नमाज़ में क़याम फ़र्ज़ नहीं। (3) क़िरत मुतलक़न एक आयत पढ़ना, फ़र्ज़ की दो रकअतों में और वित्र व नवाफ़िल की हर रकअत में फ़र्ज़ है मुक़्तदी को किसी नमाज़ में क़िरत जाइज़ नहीं। (4) रुकूअ् करना। (5) सज्दा करना। (6) क़अ़दा अख़ीरा यानी नमाज़ पूरी करके आख़री अत्तहिय्यात में बैठना। (7) ख़ुरूजे बेसुन्एही यानी दोनों तरफ़ सलाम फेरना।

इन फ़र्ज़ों में से एक भी रह जाए तो नमाज़ नहीं होती (सज्दए सह्व करने से भी नहीं।)

वाजिबाते नमाज़

फ़र्ज़ की पहली दो रकअतों में और बाक़ी नमाज़ों की हर रकअत में एक बार पूरी अलहम्दु पढ़ना, इसके बाद फ़र्ज़ नमाज़ की पहली दो रकअतों में और वित्र व सुन्नत व नफ़्ल की हर रकअत में छोटी सूरत या तीन छोटी आयतें या वह एक आयत जो तीन छोटी आयतों के बराबर हो पढ़ना। क़ौमा यानी रुकूअ के बाद सीधा खड़ा होना। जल्सा यानी दोनों सज्दों के दरमियान सीधा बैठना। क़अ़दा ऊला यानी तीन या चार रकअत वाली नमाज़ में दो रकअतों के बाद बैठना। दोनों क़अ़दों में तशह्हुद (अत्तहिय्यात) पढ़ना। क़अ़दा ऊला में तशह्हुद परकुछ न पढ़ना। इमाम जब क़िरत करे बलन्द आवाज़ से या आहिस्ता तो उस वक़्त मुक़्तदी का चुप रहना, सिवाए क़िरत के तमाम वाजिबात में इमाम की मुताबिअत करना, तरतीब क़ाइम रखना, तमाम अरकान सुकूनो इत्मीनान से अदा करना। इमाम को फ़ज्र, मग़रिब, इशा, जुमा, ईदैन, तरावीह और रमज़ान के वित्रों में आवाज़ से क़िरत करना, ज़ोहर और अस्र में आहिस्ता क़िरत करना, ईदैन की नमाज़ में छः तकबीरें ज़ाइद कहना।

फ़ायदा : नमाज़ के वाजिबात में से अगर कोई वाजिब भूल से रह जाए तो सज्दए सह्व करने से नमाज़ दुरुस्त हो जाएगी, वरना उस नमाज़ का लौटाना वाजिब है।

मंय्यफ़ जुरूका अल्लाहुम्मा इय्याका नअ़बुदु व लका नुसल्ली व नस्जुदु व इलैका नस्आ व नहफ़िदु व नरजू रह मतका व नख़्शा अज़ा बका इन्ना अज़ा बका बिल कुफ़्फ़ारि मुलहिक़ 0

तस्बीहे फ़ातिमह

सुब्हानल्लाह (33 बार) ———— سُبْحَانَ اللهِ ط

अल्हम्दु ल्लिाह (33 बार) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ط

अल्लाहु अकबर (34 बार) ———— اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط

मर्द व औरत की नमाज़ का फ़र्क़

मर्द व औरत की नमाज़ में चन्द बातों का फ़र्क़ है। औरत तकबीरे तहरीमा के वक़्त हाथ कान्धे तक उठाएगी, और कपड़े से बाहर न निकालेगी, क़याम में सीने पर हाथ बान्धेगी और हथेली की पुश्त पर हथेली रखेगी, रुकू में कम झुकेगी और घुटनों को झुकाएगी, और हाथ घुटनों पर रखेगी मगर उनको पकड़ेगी नहीं और उंगलियां फेला कर नहीं रखेगी, रुकू व सुजूद सिमट कर करेगी, सज्दे में पेट रान से और रान पिण्डली से मिलाएगी और हाथ ज़मीन पर बिछाएगी, अत्तहिय्यात में बैठते वक़्त दोनों पांव दाहिनी तरफ़ या बाईं तरफ़ निकाल कर सुरीन (कुल्हों) पर बैठेगी और हाथ की उंगलियाँ मिला कर रखेगी।

तरावीह की तस्बीह

سُبۡحَانَ ذِی الۡمُلۡکِ وَالۡمَلَکُوۡتِ ○ سُبۡحٰنَ ذِی الۡعِزَّةِ وَالۡعَظۡمَةِ
وَالۡهَيۡبَةِ وَالۡقُدۡرَةِ وَالۡكِبۡرِيَآءِ وَالۡجَبَرُوۡتِ ط سُبۡحٰنَ الۡمَلِكِ
الۡحَيِّ الَّذِیۡ لَایَنَامُ وَلَا يَمُوۡتُ ط سُبُّوۡحٌ قُدُّوۡسٌ رَبُّنَا
وَرَبُّ الۡمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوۡحُ ط اَللّٰهُمَّ اَجِرۡنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيۡرُ
يَا مُجِيۡرُ يَا مُجِيۡرُ ○ بِرَحۡمَتِكَ يَا اَرۡحَمَ الرّٰحِمِيۡنَ ○

सुब्हाना ज़िल मुल्कि वल म लकूत ० सुब्हाना ज़िल इज़्ज़ति वल अज़ मति वल हय बति वल क़ुद रति वल किब्रियाइ वल ज बरूत ० सुब्हानल मलिकिल हय्यिल्लज़ी ला यनामु वला यमूत ० सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइ कति वर्रूह, अल्लाहुम्मा अजिरना मिनन्नार ० या मुजीरु ० या मुजीरु ० या मुजीर० बिरह मतिका या अरहमर राहिमीन ०

शराइते नमाज़

नमाज़ की छः शर्ते हैं। (1) तहारत यानी नमाज़ी का बदन और कपड़े पाक हों। (2) नमाज़ की जगह पाक हो। (3) सतरे औरत यानी बदन का वह हिस्सा जिसका छुपाना फ़र्ज़ है वह छुपा हुआ हो, वह मर्द के लिये नाफ़ से घुटने तक है और औरत के लिये हाथ पांव और चेहरे के अलावा सारा बदन है। (4) इस्तिक़बाले क़िब्ला यानी मुंह

आयतुल कुर्सी

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۚ لَا تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوۡمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ مَنۡ ذَا الَّذِیۡ یَشۡفَعُ عِنۡدَهٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ؕ یَعۡلَمُ مَا بَیۡنَ اَیۡدِیۡهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ ۚ وَلَا یُحِیۡطُوۡنَ بِشَیۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرۡسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ ۚ وَلَا یَـُٔوۡدُهٗ حِفۡظُهُمَا ۚ وَهُوَ الۡعَلِیُّ الۡعَظِیۡمُ ○

अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम 0 ला तअख़ुज़ुहू सि नतुं वला नौम, लहू मा फ़िस्समा वाति वमा फ़िल अर्द, मन ज़ल लज़ी यशफ़उ इन्दहू इल्ला बि इज़निही यअ़लमु मा बैना अैदीहिम वमा ख़ल फ़हुम वला युही तूना बिशैइम मिन इलमिही इल्ला बिमा शा अ, वसिआ कुरसिय्यु हुस्समावाति वल अर्द 0 वला यऊदुहू हिफ़्ज़ु हुमा व हुवल अलिय्युल अज़ीम 0

नमाज़े जनाज़ा

नियत की मैंने नमाज़े जनाज़ा पढ़ने की मय चार तकबीरों के, सना वास्ते अल्लाह तआला के, दुरूद शरीफ़ वास्ते रसूलुल्लाह के, दुआ वास्ते इस मय्यित के (पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर कहता हुआ कानों तक हाथ उठाकर नाफ़ के नीचे बान्ध लें और यह पढ़े -

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ

وَجَلَّ ثَنَآئُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ط

सुब्हाना कल्लाहुम्मा व बिहम्दिका व तबारा कसमुका व तआला जद्दुका व जल्ला सनाउका वला इलाहा ग़ैरुका

फिर बग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहे और दुरूद शरीफ़ पढ़े (अत्तहिय्यात के बाद वाली दुरूद शरीफ़ पढ़ना अफ़ज़ल है।)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैता अ़ला इबराहीमा व अ़ला आलि इबराहीमा इन्नका हमीदुम मजीद ○

अल्लाहुम्मा बारिक अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अ़ला इब्राहीमा व अ़ला आलि इबराहीमा इन्नका हमीदुम मजीद ○

फिर बग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहे और **बालिग़ मर्द या औरत** हो तो यह दुआ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثٰنَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ ط وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ ط

अल्लाहुम्मग़ फ़िर लि हय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़ करिना व उन्साना अल्लाहुम्मा मन अहययतहू मिन्ना फ़ अहयिही अलल इस्लाम ० व मन तवफ़्फ़ैतहू मिन्ना फ़ तवफ़्फ़हू अलल ईमान ० फिर बग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहें फिर दोनों हाथ छोड़ दें और पहले दाहनी तरफ़ फिर बाएं तरफ़ सलाम फेरें।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ ط

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि ०

और नाबालिग़ लड़का हो तो यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا ط

अल्लाहुम्मज अलहु लना फ़रतंव वज अल्हु लना अजरंव व ज़ुख़रंव वज अल्हु लना शाफ़िअंव व मुशफ़्फ़आ

और नाबालिग़ लड़की हो तो यह दुआ पढ़े

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْھَا لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْھَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً ط

अल्लाहुम्मज अलहा लना फ़रतंव वज अलहा लना अजंरव व ज़ुख़रंव वज अलहा लना शाफ़िअतंव व मुशफ़्फ़अह O

फ़ायदा : मय्यित को क़ब्र में रखते वक़्त

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ○

बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाह O

मय्यित को मिट्टी देते वक़्त

पहली मरतबा

मिन्हा ख़लक़नाकुम ———— مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ ○

दूसरी मरतबा :

व फ़ीहा नुईदुकुम O ———— وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ ○

और तीसरी मरतबा

وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ○

व मिन्हा नुख़रिजुकुम ता रतन उख़रा O

तरकीबे फ़ातिहा

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

لَا يَسْتَوِیْ أَصْحٰبُ النَّارِ وَأَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ط أَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ○ لَوْ أَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ
لَّرَءَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ط وَتِلْكَ
الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ○ هُوَ اللّٰهُ
الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ط
هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط اَلْمَلِكُ
الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ ط سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ
الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ج يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ج وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैता निर्रजीम 0

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

ला यस तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल जन्नह 0 अस्हाबुल जन्नति हुमुल फ़ाइज़ून 0 लव अन्ज़लना हाज़ल कुरआना अला ज ब लिल ल र अय तहू ख़ाशिअम मु त

सद्दिअम मिन ख़श यतिल्लाह 0 व तिल कल अम्सालु नद रिबुहा लिन्नासि ल अल्लहुम य त फ़क्करून 0 हुवल्ला हुल्लज़ी ला इलाहा इल्लाहु 0 आलिमुल ग़ैबि वश्शहादह 0 हुवर रहमा नुर्रहीम 0 हुवल्ला हुल्लज़ी ला इलाहा इल्लाहु 0 अल मलिकुल कुद्दूसुस सलामुल मुमिनुल मुहय मिनुल अज़ीज़ुल जब्बारुल मु त कब्बिर 0 सुब्हा नल्लाहि अम्मा युश रिकून 0 हुवल्ला हुल ख़ालिकुल बारिउल मुसव्विरु लहुल अस्माउल हुस्ना 0 युसब्बिहु लहू मा फ़िस समा वाति वल अर्द, व हुवल अज़ीज़ुल हकीम 0

सूरए काफ़िरून

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ○ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ○ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ○ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ○ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ○ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ○

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

कुल या अय्युहल काफ़िरूना 0 ला अअ़बुदु मा तअ़बुदून 0 वला अन्तुम आबिदुना मा अअ़बुद 0 वला अना आबिदुम मा अबत्तुम 0 वला अन्तुम आबिदूना मा अअ़बुद 0 लकुम दीनुकुम वलि यदीन 0

सूरए इख़लास

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

قُلۡ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمۡ یَلِدۡ ○ وَلَمۡ یُوۡلَدۡ ○
وَلَمۡ یَکُنۡ لَّهٗ کُفُوًا اَحَدٌ ○

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

कुल हुवल्लाहु अहद 0 अल्लाहुस्समद 0 लम यलिद व लम यूलद 0 वलम यकुल्लहू कुफुवन अहद 0 **(तीन बार पढ़ें)**

सूरए फ़लक़

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ○ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ
اِذَا وَقَبَ ○ وَمِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الۡعُقَدِ ○ وَمِنۡ شَرِّ
حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ○

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

कुल अऊज़ु बि रब्बिल फ़लक़ 0 मिन शर्रि मा ख़लक़ 0 वमिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब 0 व मिन शर्रिन नफ़्फ़ासाति फ़िल उक़द 0 व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद 0

सूरए नास

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ○ مَلِكِ النَّاسِ ○ اِلٰهِ النَّاسِ ○

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ○ اَلَّذِىْ يُوَسْوِسُ ○

فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ○ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ○

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

कुल अऊजु बि रब्बिन नासि 0 मलिकिन नासि 0 इला हिन्नास 0 मिन शर्रिल वस वासिल ख़न्ना सिल्लज़ी युवस विस फी सदूरिन्नासि 0 मिनल जिन्नति वन्नास 0

सूरए फ़ातिहा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ

الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ

الْمُسْتَقِيْمَ ط صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ط

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○ اٰمِيْن ○

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन 0 अर्रहमा

निर्रहीम ० मालिकि यौमिद्दीन ० इय्याका नअ़बुदु व इय्याका नस्तईन ० इहदिनस सिरातल मुस्तक़ीमा ० सिरातल लज़ीना अन अम्ता अलैहिम ग़ैरिल मग़दूबि अलैहिम वलद्दाल्लीन ० (आमीन)

मुख़्तलिफ़ आयतें

الٓمّٓ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ ج هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ○
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ ط وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ
وَمَا اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ط وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ○ اُولٰٓئِكَ
عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ وَاِلٰهُكُمْ
اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ط لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ○ وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً
لِّلْعٰلَمِيْنَ ○ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَا اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ
رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ○ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ○
اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ
سَيِّدِنَا وَمَوْلَنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ ○ صَلٰوةً وَّسَلَامًا
عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ ○ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ○
وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

अलिफ़ लाम मीम ज़ालिकल किताबु ला रै बफ़ीह 0 हुदल लिल मुत्तक़ीनल्लज़ीना यूमिनूना बिल ग़ैबि व युक़ीमुनस्सलाता व मिम्मा रज़क़नाहुम युनफ़िक़ून 0 वल्लज़ीना यूमिनू ना बिमा उनज़िला इलैका वमा उनज़िला मिन क़ब्लिक 0 व बिल आख़िरति हुम यूक़िनून0 उलाइका अला हुदम मिंर रब्बिहिम व उलाइका हुमुल मुफ़लिहून 0

व इलाहुकुम इलाहुं वाहिद 0 लाइलाहा इल्ला हुवर्रहमानुर्रहीम 0 इन न रहमतल्लाहि क़रीबुम मिनल मुहसिनीन 0 वमा अरसलनाका इल्ला रहमतल लिल आलमीन 0 मा का ना मुहम्मदुन अबा अ हदिम मिंर रिजालिकुम वला किंर रसूलल्लाहि व ख़ातमन नबिय्यीन व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन अलीमा 0 इन्नल्लाहा व मलाइ क त हू यूसल्लूना अलन्नबिय्यि 0 या अय्युहल लज़ीना आमनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा 0

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव व बारिक व सल्लिम O सलातंव व सलामन अलैका या रसूलल्लाह O सुब्हाना रब्बिका रब्बिल इज़्ज़ति अम्मा यसिफ़ून O व सलामुन अलल मुरसलीन O वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन O

बख़्शने का तरीक़ा

ऐ अल्लाह मैंने तेरा कलाम पढ़ा (और जो कुछ यह तबर्रुक हाज़िर है) इसे अपनी बारगाह में क़ुबूल फ़रमा इसमें जो कुछ ग़लतियाँ हों अपने फ़ज़्लो करम से मुआफ़ फ़रमा, और इनका सवाब हम सबके आक़ा व मौला हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में ब तौरे नज़राना पेश करते हैं क़ुबूल फ़रमा, फ़िर हुज़ूर के सदक़े व तुफ़ैल में जुमला अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की अरवाहे तैयिबात को हदयतन व तोहफ़तन पेश फ़रमा, फिर हुज़ूर के सदक़े में व अंबियाए किराम के वसीले से जुमला सहाबए किराम व अज़वाजे मुतह्हरात ताबिईन व तबए ताबिईन व जुमला औलियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन की अरवाहे तय्येबात को इसका सवाब अता फ़रमा फिर बुज़ुर्गाने दीन के वसीले से जुमला मुमीनीन व मुमिनात की रूहों को इसका सवाब अता फ़रमा।

बिल ख़ुसूस.............. की रूह को इसका सवाब अता फ़रमा।

नोट : बिल ख़ुसूस के बाद जिसके नाम की फ़ातिहा हो उसका नाम लें।

दुरूदे ताज

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ صَاحِبِ التَّاجِ وَالْمِعْرَاجِ وَالْبُرَاقِ وَالْعَلَمِ ○ دَافِعِ الْبَلَاءِ وَالْوَبَاءِ وَالْقَحْطِ وَالْمَرَضِ وَالْاَلَمِ ○ اِسْمُهٗ مَكْتُوْبٌ مَّرْفُوْعٌ مَّشْفُوْعٌ مَّنْقُوْشٌ فِى اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ ○ سَيِّدِ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ ○ جِسْمُهٗ مُقَدَّسٌ مَّعَطَّرٌ مُّطَهَّرٌ مُّنَوَّرٌ فِى الْبَيْتِ وَالْحَرَمِ ○ شَمْسِ الضُّحٰى بَدْرِ الدُّجٰى صَدْرِ الْعُلٰى نُوْرِ الْهُدٰى كَهْفِ الْوَرٰى مِصْبَاحِ الظُّلَمِ جَمِيْلِ الشِّيَمِ شَفِيْعِ الْاُمَمِ صَاحِبِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاللّٰهُ عَاصِمُهٗ وَجِبْرِيْلُ خَادِمُهٗ وَالْبُرَاقُ مَرْكَبُهٗ وَالْمِعْرَاجُ سَفَرُهٗ ○ وَسِدْرَةُ الْمُنْتَهٰى مَقَامُهٗ ○ وَقَابَ قَوْسَيْنِ مَطْلُوْبُهٗ وَالْمَطْلُوْبُ مَقْصُوْدُهٗ وَالْمَقْصُوْدُ مَوْجُوْدُهٗ ○ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ○ خَاتَمَ النَّبِيِّنَ ○ شَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ ○

اَنِیْسِ الْغَرِیْبِیْنَ رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ رَاحَةِ الْعَاشِقِیْنَ مُرَادِ
الْمُشْتَاقِیْنَ ○ شَمْسِ الْعَارِفِیْنَ ○ سِرَاجِ السَّالِکِیْنَ ○
مِصْبَاحِ الْمُقَرَّبِیْنَ ○ مُحِبِّ الْفُقَرَآءِ وَالْغُرَبَاءِ
وَالْمَسَاکِیْنَ ○ سَیِّدِ الثَّقَلَیْنِ ○ نَبِیِّ الْحَرَمَیْنِ ○ اِمَامِ
الْقِبْلَتَیْنِ ○ وَسِیْلَتِنَا فِی الدَّارَیْنِ ○ صَاحِبِ قَابَ
قَوْسَیْنِ ○ مَحْبُوْبِ رَبِّ الْمَشْرِقَیْنِ وَالْمَغْرِبَیْنِ ○
جَدِّ الْحَسَنِ وَالْحُسَیْنِ مَوْلَانَا وَمَوْلَی الثَّقَلَیْنِ اَبِی الْقَاسِمِ
مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ ط نُوْرٍ مِّنْ نُّوْرِ اللّٰهِ ط یَآاَیُّهَا الْمُشْتَاقُوْنَ
بِنُوْرِ جَمَالِهٖ صَلُّوْا عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ○

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिन साहिबित्ताजि वल मिअ्राजि वल बुराक़ि वल अलम ० दाफ़िइल बलाइ वल वबाइ वल क़हति वल मरदि वल अलम ० इसमुहू मक्तूबुम मरफ़ूउम मशफ़ूउम मनक़ूशुन फ़िल्लौहि वल क़लम ० सैयिदिल अ र बि वल अजम ० जिस्मुहू मुक़द्दसुम मुअत्तरुम मुतह्हरुम मुनव्वरुन फ़िल बैति वल हरम ० शमसिद्दुहा बदरिद्दुजा सदरिल उला नूरिल हुदा कहफ़िल वरा मिस्बाहिज़्ज़ूलम ० जमीलिश शियम ० शफ़ी इल उमम० साहिबिल जूदि

वल करम 0 वल्लाहु आसिमुहू वजिब्रीलु ख़ादिमुहू वल बुराकु मरकबुहू वल मिअ़राजु स फ़ रुहू वसिदरतुल मुन्तहा मक़ामुहू व क़ा ब क़ौसैनि मतलूबुहू वल मतलूबु मक़सुदुहू वल मक़सुदु मौजूदुहू सैयिदिल मुरसलीन 0 ख़ातमन नबिय्यीन 0 शफ़ीइल मुज़्निबीन 0 अनीसिल ग़रीबीन 0 रहमतिल लिल आलमीन 0 रा हतिल आशिक़ीन 0 मुरादिल मुश्ताक़ीन 0 शम्सिल आरिफ़ीन 0 सिराजिस्सालिकीन 0 मिस्बाहिल मुक़र्रबीन मुहिब्बिल फ़ुक़राइ वल ग़ुरबाइ वल यतामा वल मसाकीन 0 सैयिदिस्सक़लैनि नबिय्यिल हर मैनि 0 इमामिल क़िब्लतैनि वसी लतिना फ़िद्दारैनि 0 साहिबे क़ा ब क़ौसैनि महबूबि रब्बिल मशरिक़ैनि वल मग़रिबैन 0 जद्दिल हसनि वल हुसैन 0 मौलाना व मौलस सक़लैन 0 अबिल क़ासिमि मुहम्मदिब्नि अब्दिल्लाह नूरिम मिन नूरिल्लाह या अय्युहल मुश्ताक़ूना बिनूरि जमालिही सल्लू अलैहि व आलिही व अस्हाबिही व सल्लिमू तस्लीमा 0

कुरबानी का तरीक़ा

जानवर को बाएं पहलू पर इस तरह लिटाएं कि क़िब्ले को उस का मुंह हो और दाहिना पांव उसके पहलू पर रख कर यह दुआ पढ़े -

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

حَنِيْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ○ اِنَّ صَلوٰتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَایَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ لَكَ وَمِنْكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ○

इन्नी वज्जहतु वजिहया लिल्लज़ी फ़ त रस्समावाति वल अर्दा हनींफ़ंव व मा अना मिनल मुशरिकीन 0 इन्ना सलाती व नुसुकी व महयाया व ममाती ल्लिाहि रब्बिल आलमीन 0 ला शरीका लहू व बि ज़ालिका उमिरतु व अना मिनल मुस्लिमीन 0 अल्लाहुम्मा लका व मिन्का बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर ज़िबह करें।

फिर यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَحَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ○

अल्लाहुम्मा तक़ब्बल मिन्नी कमा तक़ब्बलता मिन ख़लीलिका इबराहीमा अलैहिस्सलाम व हबीबिका मुहम्मदिन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम 0

नोट : अगर कुरबानी अपनी तरफ़ से हो तो **मिन्नी** और अगर दूसरे की तरफ़ से हो तो **मिन्नी** के बजाए **मिन** कहकर उसका नाम ले।

तकबीरे तशरीक़

اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ○ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ ○

اَللّٰہُ اَکْبَرُ ○ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ ○

अल्लाहु अकबर 0अल्लाहु अकबर 0 ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर 0 अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द 0

नोट : नवीं ज़िल हिज्ज़ा की फ़ज्र से तेरहवीं क़ी अस्त्र तक हर नमाज़े बा जमाअत के फ़ौरन बाद यही तकबीर एक बार कहना वाजिब और तीन बार कहना अफ़ज़ल है।

दुआए अक़ीक़ा

पैदाइश के सातवें दिन अक़ीक़ा करना मुस्तहब है अगर लड़का हो तो दो बकरे और लड़की हो तो एक बकरी ज़िबह करने से पहले यह दुआ पढ़े :

लड़के के अक़ीक़े की दुआ यह है

اَللّٰھُمَّ ھٰذِہٖ عَقِیْقَۃُ ابْنِیْ فُلَاں ○

अल्लाहुम्मा हाज़िही अक़ीक़तुब्नी फुलां (फुलां की जगह बेटे का नाम ले, अगर दूसरे के बेटे का अक़ीक़ा करे तो इब्ने फुलां की जगह लड़का और उसके बाप का नाम लें)

دَمُھَا بِدَمِہٖ وَلَحْمُھَا بِلَحْمِہٖ وَشَحْمُھَا بِشَحْمِہٖ وَعَظْمُھَا بِعَظْمِہٖ وَ

جِلْدُھَا بِجِلْدِہٖ وَشَعْرُھَا بِشَعْرِہٖ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا فِدَاءً لِّابْنِیْ فُلَاں

दमुहा बि दमिहि व लहमुहा बि लहमिहि व शहमुहा बि शहमिहि व अज़मुहा बि अज़मिहि व जिलदुहा बि जिलदिहि व शअ़रुहा बि शअ़रिहि, अल्लाहुम्मज अल्हा फ़िदाअल लि इब्नि फुलां (इस जगह भी फुलां की जगह बेटे का नाम लें और अगर दूसरे के लड़के का अक़ीक़ा करे तो लि के बाद उसका और उसके बाप का नाम ले) .

مِنَ النَّارِ وَ تَقَبَّلْهَا مِنْهُ كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ نَبِيِّكَ الْمُصْطَفٰى وَ حَبِيْبِكَ الْمُجْتَبٰى عَلَيْهِ التَّحِيَّةُ وَالثَّنَاءِ اِنَّ صَلَاتِىْ وَ نُسُكِىْ وَ مَحْيَاىَ وَ مَمَاتِىْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ○

मिनन्नारि व तक़ब्बलहा मिन्हु कमा तक़ब्बल तहा मिन नबिय्यिकल मुस्तफ़ा व हबीबिकल मुज्तबा अलैहित्तहिय्यतोवस्सनाइ, इन्ना सलाती व नुसुकी व महयाया व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ० ला शरीका लहू व बि ज़ालिका उमिरतु व अना मिनल मुस्लेमीन ० अल्लाहुम्मा मिन्का व ल का बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कहकर ज़िबह करे।

लड़की के अक़ीक़े की दुआ यह है

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ بِنْتِىْ فُلَاں

अल्लाहुम्मा हाज़िहि अक़ीक़तु बिन्ती फुलां (फ़ुलां की

जगह अपनी बेटी का नाम ले, अगर दूसरे की लड़की का अक़ीक़ा करे तो बिन्ती फुलां की जगह लड़की और उसके बाप का नाम ले।

دَمُهَا بِدَمِهَا وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهَا وَ شَحْمُهَا بِشَحْمِهَا وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهَا

وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهَا وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهَا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لِبِنْتِيْ فُلَانَ

दमुहा बि दमिहा व लहमुहा बि लहमिहा व शहमुहा बि शहमिहा व अज़मुहा बि अज़मिहा व जिलदुहा बि जिलदिहा व शअ़रुहा बि शअ़रिहा अल्लाहुम्मज अल्हा फ़िदाअन लि बिन्ती फुलां (इस जगह भी फुलां की बजाए बेटी का नाम ले। अगर दूसरे की लड़की का अक़ीक़ा करे तो लि के बाद लड़की और उसके बाप का नाम लें

مِنَ النَّارِ وَ تَقَبَّلْتَهَا مِنْهَا كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ نَبِيِّكَ الْمُصْطَفٰى

وَحَبِيْبِكَ الْمُجْتَبٰى عَلَيْهِ التَّحِيَّةُ وَ الثَّنَاءِ اِنَّ صَلَاتِيْ وَ نُسُكِيْ

وَمَحْيَايَ وَ مَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ٥ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ

اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ٥ اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ٥

मिनन्नारि व तक़ब्बल तहा मिन्हा कमा तक़ब्बल तहा मिन नबिय्यिकल मुस्तफ़ा व हबीबिकल मुज्तबा अलैहित्तहिय्यतो वस्सनाइ, इन्ना सलाती व नुसुकी व महयाया व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन O ला शरीका लहू व बि ज़ालिका उमिरतु व अना मिनल मुस्लेमीन O अल्लाहुम्मा मिन्का व लका बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर O कहकर ज़िबह करे।

मस्अला : गोश्त के तीन हिस्से कर डाले एक हिस्सा ग़रीब मिस्कीन को दे और दो हिस्से अपने अज़ीज़ो अक़ारिब (रिश्तेदार) और दोस्त अहबाब में तक़सीम करे या खिलाए। बच्चे के सर के बाल तराश कर चाँदी या सोने के बराबर वज़न कर के मसाकीन को दें। लड़के के अक़ीक़े में अगर ताक़त न हो तो एक बकरा भी ज़िबह कर सकते हैं। अक़ीक़े का गोश्त मां बाप, दादा दादी, नाना नानी वग़ैरह सब खा सकते हैं। **(बहारे शरीअत)**

ईदैन की नमाज़ का तरीक़ा

नियत की मैंने दो रकअत नमाज़ वाजिब ईदुल फ़ित्र (या ईदे अज़्हा) की मय ज़ाइद 6 तकबीरों के, वास्ते अल्लाह तआला के, पीछे इस इमाम के, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर।

नियत करके दोनों हाथ कानों तक उठाए और अल्लाहु अकबर कह कर हाथ बाँध ले फिर सुब्हाना कल्लाहुम्मा पढ़े फिर कानों तक हाथ उठाए और अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ छोड़ दे, फिर दूसरी बार कानों तक हाथ उठाए और अल्लाहु अकबर कहकर हाथ छोड़ दे, फिर तीसरी बार हाथ उठाए और अल्लाहु अकबर कह कर बाँध लें, फिर इमाम अऊज़ु बिल्लाह, बिस्मिल्लाह और सूरए फ़ातिहा और कोई सूरत पढ़े (मुक़्तदी ख़ामोश रहे) फिर रुकू व सज्दे करे, जब दूसरी रकअत के लिये खड़े हो तो

इमाम बिस्मिल्लाह अलहम्दु और सूरत पढ़े (मुक़्तदी ख़ामोश खड़े रहे) फिर तीन बार कानों तक हाथ ले जाकर अल्लाहु अकबर कहे और हर बार हाथ छोड़ दे और चौथी बार बग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहता हुआ रुकू में जाए और मामूल के मुताबिक़ नमाज़ पूरी करे।

मस्नून दुआएं

जब घर से निकलें

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ ○

बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अलल्लाह ०

तर्जमा : अल्लाह के नाम के साथ मैंने अल्लाह पर भरोसा किया।

जब घर में दाख़िल हो तो कहे

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا ○

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल ख़ैरल मव लजि व ख़ैरल मख़ रजि बिस्मिल्लाहि व लज्ना व बिस्मिल्लाहि ख़रज्ना व अलल्लाहि रब्बिना तवक्कल्ना ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह! मैं तुझसे घर के अन्दर आने और घर से बाहर जाने की ख़ैरो बरकत का सवाल करता हूँ। हम

अल्लाह के नाम के साथ ही घर में आते हैं और अल्लाह के नाम के साथ ही घर से जाते हैं। और अपने परवर दिगार अल्लाह जल्ला शानुहु पर ही हमारा भरोसा है।

जब मस्जिद में दाख़िल हों

पहले सीधा पांव दाख़िल करे और यह दुआ पढ़े।

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ○

अल्लाहुम्मफ़ तहली अबवाबा रहमतिका 0

तर्जमा : ऐ अल्लाह मेरे लिये रहमत के दरवाज़े खोल दे

जब मस्जिद से बाहर हो

पहले उल्टा पांव बाहर निकाले और यह दुआ पढ़े -

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ ○

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका मिन फ़दलिका वरहमतिका 0

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं तुझसे सवाल करता हूँ तेरे फ़ज़्ल और तेरी रहमत का।

जब खाने से फ़ारिग़ हों

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا

مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ○

अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी अत अमना व सक़ाना व ज अ लना मिनल मुस्लिमीन ०

तर्जमा : तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह के लिये जिसने हमें खिलाया और पिलाया और मुसलमानों में से किया।

जब किसी के घर खाए तो यह भी कहे

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَّنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ ○

अल्लाहुम्मा अतइम मन अत अमनी वस्क़े मन सक़ानी

तर्जमा : ऐ अल्लाह खिला इसको जिसने मुझे खिलाया और पिला इसको जिसने मुझे पिलाया।

जब कोई लिबास पहने

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ

وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَیَاتِیْ ○

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारि या बिहि अव रती व अता जम्मलु बिहि फ़ी हयाती ०

तर्जमा : तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह के लिये हैं जिसने मुझे लिबास पहनाया कि मैं इससे सतर छुपा ता हूँ। और अपनी ज़िन्दगी में इसके साथ ज़ीनत करता हूँ।

जब आईना देखें

اَللّٰهُمَّ حَسَّنْتَ خَلْقِيْ فَحَسِّنْ خُلُقِيْ ○

अल्लाहुम्मा हस्सन्ता ख़लक़ी फ़हस्सिन ख़ुलुक़ी ○

तर्जमा : ऐ अल्लाह तूने मेरी सूरत को अच्छी बनाया है तू मेरी सीरत को भी अच्छा बना दे।

रमज़ान का रोज़ा रखने की नियत

بِصَوْمِ غَدٍ نَّوَيْتُ مِنْ شَهْرِ رَمَضَانَ ○

बि सौमि ग़दिन नवैतु मिन शहरि रमज़ान ○

तर्जमा : नियत की मैंने रमज़ान के महीने के कल के रोज़े की

नोट : रमज़ान के अलावा नफ़्ल या मन्नत का रोज़ा हो तो रमज़ान की जगह उसका नाम ले।

इफ़्तार के वक़्त कहे

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ ○

अल्लाहुम्मा लका सुम्तु व बिका आमन्तु व अलैका तवक्कल्तु व अला रिज़क़िका अफ़तरतु ○

तर्जमा : ऐ अल्लाह तेरे ही लिये रोज़ा रखा और तुझ ही पर ईमान लाया और तुझ ही पर भरोसा किया और तेरी ही दी हुई रोज़ी से इफ़्तार किया मैंने।

जब बैतुल ख़ला जाना हो

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ ○

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल ख़ुबसि वल ख़बाइस ○

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ ख़बीस जिन्नों और जिन्नियों से।

जब बैतुल ख़ला से निकल जाए

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْٓ اَذْھَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ ○

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़हबा अन्निल अज़ा व आफ़ानी ○

तर्जमा : तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह के लिये हैं जिसने मुझसे तकलीफ़ को दूर किया और मुझको आफ़ियत दी।

जब क़ब्रिस्तान जाए

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَآ اَھْلَ الْقُبُوْرِ ○ یَغْفِرُ اللہُ لَنَا وَلَکُمْ وَاَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ ○

अस्सलामु अलैकुम या अहलल क़ुबूरि ○ यग़फ़िरुल्लाहु लना व लकुम व अन्तुम सलफ़ुना व नहनु बिल अस्रि ○

तर्जमा : सलाम हो तुम पर ऐ क़ब्र वालो अल्लाह हमें और तुम्हें बख़्शे तुम आगे जा चुके हो और हम तुम्हारे पीछे आने वाले हैं।

जब चाँद देखे

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهٗ بِالْيُمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ ○

وَالتَّوْفِيْقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى رَبِّىْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ ط

अल्लाहुम्मा अहिल्लहु बिल युमनि वल ईमानि वस सलामति वल इस्लामि वत्तौफ़ीक़ि लिमा तुहिब्बु व तरदा रब्बी व रब्बु कल्लाह O

तर्जमा : ऐ अल्लाह उस चाँद को हम पर बरकत ईमान, ख़ैरियत, सलामती वाला कर दे और हमें तौफ़ीक़ दे उस पर अमल करे जो तुझे पसन्द हो। ऐ चाँद मेरा और तेरा रब अल्लाह है।

जब सवारी पर बैठ जाए

سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ

وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ○

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़रा लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़रिनीना व इन्ना इला रब्बिना लमुन क़लिबून

तर्जमा : पाक है वह जिसने इस को हमारे क़ब्ज़े में किया वरना हम इस को क़ाबू में करने वाले न थे और हम अपने परवर दिगार की तरफ़ लौटने वाले हैं।

शबे बराअत व शबे क़द्र में पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ یَا غَفُوْرُ ○

अल्लाहुम्मा इन्नका अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल अफ़वा फ़अ़फ़ु अन्नी या ग़फ़ूर O

तर्जमा : ऐ अल्लाह बेशक तू मुआफ़ करने वाला है और मुआफ़ी को पसन्द करता है, पस मुझको मुआफ़ फ़रमा दे ऐ बख़्शने वाले।

खाने पीने और सोने का मस्नून तरीक़ा

हाथ धोकर सर ढांक कर सीधे हाथ से बिस्मिल्लाहि अला बरकतिल्लाह O या बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम कह कर खाना शुरू करे और फ़ारिग़ होकर खाना खाने के बाद की दुआ पढ़े (दुआ इसी किताब में मौजूद है) पानी हमेशा बैठकर सीधे हाथ से बिस्मिल्लाह पढ़ कर तीन सांस में पीना चाहिये अर पीकर अलहम्दु लिल्लाह कहना चाहिये।

सोने का मस्नून तरीक़ा

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि जो मुसलमान बा वुज़ू सोए अगर उसी रात को इन्तिक़ाल हो जाए तो उसको शहादत का दर्जा अता होगा। हदीसे पाक में है कि जो मुसलमान सोते वक़्त आयतुल कुर्सी पढ़ ले तो वह ख़ुद और उनके पड़ोसी

अमनो अमान में रहेंगे। सोने से पहले तीनो कुल शरीफ़ (सूरए इख़्लास, सूरए फ़लक़, सूरए नास) पढ़ना भी मस्नून है, इससे इन्सान शैतान के शर से महफ़ूज़ रहता है

सोने से पहले बिस्तर को झाड़ लेना चाहिये दाहिनी करवट से दाहिने हाथ को रुख़सार के नीचे रख कर क़िब्ले रुख़ सोना मस्नून है फिर उसके बाद दिल चाहे तो करवट बदल ले।

पेट के बल लेटने से परहेज़ करे क्यूँकि यह जहन्नमियों की निशानी है।

सोते वक़्त यह दुआ पढ़ी जाए

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰ ○

अल्लाहुम्मा बि इसमिका अमूतु व अहया ०

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं तेरे ही नाम के साथ मरता (सोता) हूँ और तेरे ही नाम के साथ (ज़िन्दा) उठता हूँ।

जब सोकर उठे तो यह दुआ पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ ○

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बअ़दा मा अमातना व इलैहिन नुशूर ०

तर्जमा : तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह के लिये हैं जिसने हमें मारने (सोने) के बाद ज़िन्दा (उठाया) किया और हमें उसी की तरफ़ उठना है।

सुबह जल्दी उठ कर फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअत पढ़े, नमाज़ न पढ़ना और सूरज निकलने तक सोते रहना नहूसत लाता है, बरकत ले जाता है। शैतान ऐसे शख़्स के कान में पेशाब करना पसन्द करता है।

नूरानी लम्हात

यौमे आशूरा के फ़ज़ाइल

मुहर्रमुल हराम इस्लामी सन् व साल का पहला महीना है इस महीने की दस तारीख़ को यौमे आशूरा कहते हैं, तारीख़े आलम में यह दिन बड़ा ही अहम दिन शुमार किया जाता है, दुनिया के बड़े बड़े अहम वाक़िआत इसी दिन रू नुमा हुए इसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबह क़ुबूल हुई, इसी दिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती कोहे जुदी पर सलामती के साथ पहुँची, इसी दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़लीलुल्लाह का लक़बे जलील अता किया गया, इसी दिन नारे मनरूद आप पर गुलज़ार हुई, इसी दिन हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम और आपके बेटों की एक अर्से बाद मुलाक़ात हुई, इसी दिन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम क़ैद से रिहाई दिये गए, इसी दिन हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से ज़िन्दा व सलामत बाहर तशरीफ़ लाए, इसी दिन हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को सलतनत व अंगुश्त्री अता हुई, इसी दिन हज़रत मूसा व

हारून अलैहिमस्सलाम की दुआ कुबूल हुई, इसी दिन बनी इस्राईल के लिये दरयाए नील में रास्ते पैदा किये गए, और उन्हें फ़िरऔन से नजात मिली, इसी दिन फ़िरऔन अपनी फ़िरऔनियत और फ़िरऔनियों समेत दरयाए नील में ग़र्क़ हो गया, इसी दिन हज़रत इदरीस व हज़रत ईसा अलैहिमस्सलाम आसमान पर उठाए गए और यही वह दिन है जिसमें सिब्ते पयम्बर हज़रत अली मुरतज़ा के नूरे नज़र हज़रत फ़ातिमा के लख़्ते जिगर सय्यिदुश शुहदा हज़रत सैयिदुना इमाम हुसैन और उनके शहज़ादगाने आली वक़ार अअ़वानो अन्सार और रुफ़क़ाए जां निसार रिज़वानुल्लाहि अन्हुम अजमईन ने मैदाने करबला में भूक और प्यास के आलम में जामे शहादत नोश फ़रमाकर यज़ीद व यज़ीदियत को हमेशा के लिये दफ़्न कर दिया।

नफ़्लों की नियत

नियत की मैंने चार रकअत (या दो रकअत) नफ़्ल नमाज़ की वास्ते अल्लाह तआला के, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर।

नोट : नफ़्ल नमाज़ में वक़्त का नाम लेना ज़रूरी नहीं।

शबे आशूरा के नवाफ़िल

(1) शबे आशूरा में चार रकअत नफ़्ल एक सलाम से अदा करें, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतुल

कुर्सी एक बार और सूरए इख़्लास (कुल हुवल्लाह) तीन बार पढ़े, जब क़अदा ऊला में बैठे तो अत्तहिय्यात के बाद दुरूद शरीफ़ व दुआए मासूरा पढ़कर खड़े हों, तीसरी रकअत सना से शुरू करे, नमाज़ से फ़ारिग़ होकर सूरए इख़्लास (कुल हुवल्लाह) 100 मरतबा पढ़े।

(2) दो दो रकअत की नियत से सौ रकअत नफ़्ल अदा करे हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास (कुल हुवल्लाह) तीन तीन बार पढ़े। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर 70 बार यह तस्बीह पढ़े :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ○

सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर ○

दसवीं मुहर्रम आशूरा के दिन रोज़े की बड़ी फ़ज़ीलत है, हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि आशूरा का रोज़ा एक साल के गुनाहों को मिटा देता है।

यौमे आशूरा इन मअ़मूलात पर अमल करें, और बरकाते दारैन हासिल करें।

ग़ुस्ल करना, सुर्मा लगाना, नाख़ून तराशना, सदक़ा करना, अपने अहलो अयाल पर रिज़्क़ में वुसअत करना, यानी क़िस्म क़िस्म के खाने तैयार करके खिलाना, मरीज़ों की इयादत करना, यतीमों के सिर पर हाथ फैरना,

मुसलमानों में सुलह कराना, उलमाए किराम की ज़्यारत करना, एक हज़ार मरतबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ पढ़ना, अपने और तमाम मुसलमानों के लिये दुआ करना, नवाफ़िल पढ़ना, शरबत या पानी की सबील लगाना, खिचड़ा पकाना, वाज़ो नसीहत और शहादत की मज्लिस मुनअक़िद करना, मज्लिसे शहादत में वाक़िआते शहादत के साथ ख़ुलफ़ाए राशिदीन और दीगर सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अन्हुम अजमईन का ज़िक्रे ख़ैर करना वग़ैरह।

नमाज़े यौमे आशूरा

दसवीं मुहर्रम आशूरा के दिन ग़ुस्ल करें फिर दो रकअत नफ़्ल अदा करे, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास (कुल हुवल्लाह) दस मरतबा पढ़े। नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी एक बार और दुरूदे इब्राहीमी (अत्तहिय्यात के बाद वाली दुरूद शरीफ़) नौ बार पढ़ कर दुआए आशूरा पढ़, यह दुआ सेहत व आफ़ियत ख़ैरो बरकत इल्मो अमल कामयाबी और हुसूले नेअ़मत के लिये तीर बहदफ़ है। (बेहद फ़ाएदे मन्द है।)

दुआए आशूरा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ ○ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ الْخَلْقِ وَمِلَاَ الْمِيْزَانِ

وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضَاءِ وَزِنَةَ الْعَرْشِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ
عَدَدَ الْخَلْقِ وَمِلْأَ الْمِيْزَانِ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ
الرِّضَآءِ وَزِنَةَ الْعَرْشِ وَلَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ الْخَلْقِ وَمِلْأَ
الْمِيْزَانِ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضَاءِ وَزِنَةَ الْعَرْشِ
وَاللّٰهُ اَكْبَرُ عَدَدَ الْخَلْقِ وَمِلْأَ الْمِيْزَانِ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ
وَمَبْلَغَ الرِّضَآءِ وَزِنَةَ الْعَرْشِ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ
الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ○ عَدَدَ الْخَلْقِ وَمِلْأَ الْمِيْزَانِ وَمُنْتَهَى
الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضَآءِ وَزِنَةَ الْعَرْشِ لَامَلْجَاءَ وَلَا مَنْجَاءَ
لَاخَلَاصَ وَلَامَنَاصَ وَلَامَغْرِبَ وَلَامَفْزَعَ مِنَ اللّٰهِ
اِلَّا اِلَيْهِ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ الشَّفْعِ وَالْوَتْرِ وَعَدَدَ كَلِمَاتِ اللّٰهِ
التَّامَّةِ وَلَا حَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ○
وَهُوَحَسْبِيْ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ○ وَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ
النَّصِيْرُ ○ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ○ وَصَلَّى اللّٰهُ
تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ وَنُوْرِ عَرْشِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ
وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ○ وَهُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ○ اَللّٰهُمَّ يَاقَابِلَ
تَوْبَةِ اٰدَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ وَيَارَافِعَ اِدْرِيْسَ

يَا اَللّٰهُ بِحَقِّ عِزَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ حُرْمَتِهٖ وَ بَرَكَتِهٖ وَ شَانِهٖ وَ
جَلَالِهٖ وَ جَمَالِهٖ نَجِّنَا مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ وَ نَجِّنَا مِنَ
الطَّاعُوْنِ وَالْوَبَاءِ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ الْبَلَاءِ بِحُرْمَةِ يَوْمِ
عَاشُوْرَاءَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ مَا
بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ صَلَّى
اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ اَجْمَعِيْنَ
بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ. اٰمِيْن ثُمَّ اٰمِيْن ○

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना मुहम्मदिंव व अला आलि सय्यिदिना मोहम्मदिंव व बारिक व सल्लिम 0 सुब्हानल्लाहि अदा दल ख़ल्क़ि व मिलअल मीज़ानि व मुन्तहल इल्मि व मब्लग़र रिदाइ वज़िनतिल अर्शि वल हम्दु लिल्लाहि अदादल ख़ल्क़ि व मिलअल मीज़ानि व मुन्तहल इल्मि व मब्लग़र रिदाइ व ज़िनतल अर्शि वला इलाहा इल्लल्लाहु अदादल ख़लिक़ व मिलअल मीज़ानि व मुन्तहल इल्मि व मब लग़र रिदाइ व ज़िनतल अर्शि वल्लाहु अकबर अदादल ख़ल्क़ि व मिलअल मीज़ानि व मुन्तहल इल्मि व मब्लग़र रिदाई व ज़िनतल अर्शि वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलिय्यिल अज़ीम अदादल ख़ल्क़ि व मिल अल मीज़ानि व मुन्तहल इलमि व मब्लग़र रिदाइ व ज़िनतल अरशि ला मल्जा अ व ला मनजा अ वला ख़ला सा वला मनासा वला मग़रिबा वला मफ़ ज़ अ

मिनल्लाहि इल्ला इलैहि सुब्हानल्लाहि अ द दश्शफ़्इ वल वत्रि व अदादा कलिमा तिल्लाहित ताम्मति वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलिय्यिल अज़ीम 0 व हुवा हस्बी व निअ़मल वकील 0 व निअ़मल मौला व निअ़मन नसीर 0 गुफ़रा नका रब्बना व इलैकल मसीर 0 व सल्लल्लाहु अला ख़ैरि ख़लक़िहि व नूरि अरशिहि सय्यिदिना मुहम्मदिंव व अला आलिहि व अस्हाबिही अजमईना व हुवा अरहमुर राहिमीन0 अल्लाहुम्मा या क़ाबिला तौबति आदमा अलैहिस्सलामु यौमा आशूरा अ, व या राफ़िआ इदरीसा अलैहिस्सलामु यौमा आशूरा अ, व या मुन्जि आ इस्माईला अलैहिस्सलामु यौमा आशूरा अ, व या जामिआ शम्लि याक़ूबा अलैहिस्सलामु यौमा आशूरा अ, व या ग़ियासा इब्राहीमा अलैहिस्सलाम मिन नारि नमरूदा यौमा आशूरा अ, व या मुख़्लिसा यूसुफ़ा अलैहिस्सलामु मिनस सिज्नि यौमा आशूरा अ, व या फ़ारिजा कर्बि ज़िन्नूनि अलैहिस्सलामु यौमा अशूरा अ, वया नाजिया यूनुसा अलैहिस्सलामु मिन बतनिस स म कि यौमा आशूरा अ, व या सामिआ दावति मूसा व हारूना अलैहिस्सलामु यौमा आशूरा अ, व या मासिका सफ़ीनति नूहि अलैहिस्सलामु अलल जूदी यौमा आशूरा अ, व या राफ़िआ ईसा अलैहिस्सलामु अलस्समाइर राबिअति यौमा आशूरा अ, व काशि फ़ दुर्रि अय्यूबा अलैहिस्सलामु यौमा आशूरा अ, व ग़ाफ़िरज़ ज़म्बि लि दाऊदा

عَلَيْهِ السَّلَامُ اِلَى السَّمَآءِ يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ وَيَا مُنْجِيَ
اِسْمٰعِيْلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا جَامِعَ شَمْلِ
يَعْقُوْبَ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا غِيَاثَ
اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ مِنْ نَّارِ نَمْرُوْدَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا
مُخَلِّصَ يُوْسُفَ عَلَيْهِ السَّلَامُ مِنَ السِّجْنِ يَوْمَ
عَاشُوْرَاءَ وَيَا فَارِجَ كَرْبِ ذِي النُّوْنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ
يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا نَاجِيَ يُوْنُسَ عَلَيْهِ السَّلَامُ مِنْ
بَطْنِ السَّمَكِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا سَامِعَ دَعْوَةِ مُوْسٰى وَهَارُوْنَ
عَلَيْهِمَا السَّلَامُ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا مَاسِكَ سَفِيْنَةِ نُوْحٍ
عَلَيْهِ السَّلَامُ عَلَى الْجُوْدِيِّ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا رَافِعَ
عِيْسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ عَلَى السَّمَاءِ الرَّابِعَةِ يَوْمَ
عَاشُوْرَاءَ وَيَا كَاشِفَ ضُرِّ اَيُّوْبَ عَلَيْهِ السَّلَامُ يَوْمَ
عَاشُوْرَاءَ وَيَا غَافِرَ الذَّنْبِ لِدَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِيْ عِلْمِهٖ
يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا نَاصِرَ مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللهِ ﷺ فِي الْغَارِ
يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَمُعْطِيَ الشَّهَادَةِ لِلْحُسَيْنِ رَضِيَ ا للهُ
تَعَالٰى عَنْهُ فِي الْاَرْضِ الْكَرْبَلَاءِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا خَالِقَ
الْجَنَّةِ وَالنَّارِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا خَالِقَ السَّمَاءَ وَالْاَرْضِ

يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا خَالِقَ الْجِبَالِ وَالْبِحَارِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ
وَيَا خَالِقَ الْعَرْشِ وَالْكُرْسِيِّ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا خَالِقَ
جِبْرَائِيْلَ وَ مِيْكَائِيْلَ وَ اِسْرَافِيْلَ وَعِزْرَائِيْلَ
وَالْمَلٰئِكَةِ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَ يَا خَالِقَ
اٰدَمَ وَ حَوَّا عَلَيْهِمَا السَّلَامُ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَ يَا مُعْطِيَ
سُلَيْمَانَ عَلَيْهِ السَّلَامُ الْمُلْكَ وَالْخَاتَمَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَ
يَا مُغْرِقَ فِرْعَوْنَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا مُنْجِيَ بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ
يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَ يَا غَافِرُ لِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ وَمَا تَاَخَّرَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ يَا
اَللهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ يَا خَالِقَ اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ بِحَقِّ جَدِّ
الْحَسَنِ وَ الْحُسَيْنِ وَ بِحَقِّ حَيْدَرِ نِ الْكَرَّارِ وَ بِحَقِّ فَاطِمَةِ
بِنْتِ سَيِّدِ الْاَبْرَارِ خَلِّصْنَا مِنَ النَّارِ يَا عَزِيْزُ يَا غَفَّارُ يَا
قَاضِيَ الْحَاجَاتِ وَيَا وَلِيَّ الْحَسَنَاتِ وَيَا رَافِعَ السَّيِّئَاتِ
اِرْفَعْ سَيِّئَاتِنَا بِجَاهِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا
ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ وَيَا مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ فِيْ اُمُوْرِ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَيَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ

में सौ बरस की नेकियाँ लिखी जाती हैं और वह सत्ताईस रजब मेअ़राज की रात है। **(हदीस)**

(1) जो कोई शख़्स शबे मेअ़राज में बारह रकअत नफ़्ल चार–चार की नियतसे अदा करे, क़अ़दा ऊला में तशह्हुद पढ़े और दुरूद व दुआ पढ़ कर खड़ा हो जाए फिर सना से तीसरी रकअत शुरू करे, इस तरह बारह रकअत पूरी करे, फिर नमाज़ से फ़ारिग़ होकर एक सौ मरतबा यह तस्बीह पढ़े

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ○

सुब्हानल्लाहि वल ह़म्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर ०

और एक सौ मरतबा दुआए इस्तिग़फ़ार पढ़े :

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ ○

अस्तिग़फ़िरुल्लाहा रब्बीं मिन कुल्लि ज़म्बिंव व अतुबू इलैहि

और सो मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दीनी व दुनियवी अच्छे कामों के लिये जो दुआ मांगेगा परवर दिगारे आलम उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाएगा। (इंशा अल्लाहो तआला) हां सुबह रोज़ा ज़रूर रखे कि उस दिन की भी बड़ी फ़ज़ीलत है। सबसे पहले उसी दिन जिब्रीले अमीन वही लेकर हाज़िरे दरबारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हुए इसीलिये जो इस दिन रोज़ा रखेगा, उसको साठ महीनों के रोज़ों का सवाब मिलेगा, अलबत्ता आगे या पीछे एक रोज़ा और रख लेना चाहिये ताकि यह तन्हा न

रहे, क्योंकि नफ़्ल रोज़ा तन्हा रखना मकरूह है।

(2) जिसने शबे मेअ़राज बारह रकअत नफ़्ल अदा की, बाद में सात बार सूरए फ़ातिहा, और चार बार यह तस्बीह

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ○

सुब्हानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर पढ़ी उसकी दुआ अगर नेक व जाइज़ है तो ज़रूर कुबूल होगी। (इंशाअल्लाहु तआला)

शबे बरात की फ़ज़ीलत

शबे बरात में बाँट दिया जाता है हर हिकमत वाला काम, हमारे हुक्म से। (कुरआन)

जिस महीने में शबे बरात आती है, उस महीने के बारे में सय्यिदुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का हकीमाना इरशाद है।

माहे शाबान तमाम महीनों से अफ़ज़ल है जिस तरह मैं तमाम नबियों में अफ़ज़ल हूँ।

और फ़रमाते हैं, रजब अल्लाह का महीना है और शाबान मेरा महीना है और रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है। (सुब्हानल्लाह)

शबे बरात की इबादत

जब शाबान की पन्द्रहवीं तारीख़ पाओ तो रात में

अलैहिस्सलाम फ़ी इलमिहि यौमा आशूरा अ, व या नासिरा मुहम्मदिर रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा फ़िल ग़ारि यौमा आशूरा अ, व मुअ़तिश शहादति लिल हुसैनि रज़ियल्लाहो अन्हो फ़िल अरदिल कर बलाइ यौमा आशूरा आ वया ख़ालिक़ल जन्नति वन्नारि यौमा आशूरा अ, व या ख़ालिक़स समाइ वल अरदि यौमा आशूरा अ, व ख़ालिक़ल जिबालि वल बिहारि यौमा आशूरा अ, व या ख़ालिक़ल अर्शि वल कुरसिय्यि यौमा आशूरा अ, व या ख़ालिक़ल जिबराईला व मीकाईला व इसराफ़ीला व इज़राईला वल मलाइकति अलैहिमुस्सलामु यौमा आशूरा अ, व या मुअ़तिया सुलैमाना अलैहिस्सलामुल मुल्का वल ख़ातमा यौमा आशूरा अ, व या मुग़रिक़ा फ़िरऔना यौमा आशूरा अ, व या मुन्जि अ, बनी इस्राईला यौमा आशूरा अ, व या ग़ाफ़िरू लि मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मा तक़द्दमा मिन जंबिहि वमा तअख़्ख़रा यौमा आशूरा अ, या अल्लाहु या रहमानु या रहीमु या ख़ालिक़ल लैलि वन्नहारि बिहक़्क़ि जद्दिल हसनि वल हुसैनि व बि हक़्क़ि हैदरि निल कर्रारि व बिहक़्क़ि फ़ातिमति बिन्ति सैयिदिल अबरारि ख़ल्लिस्ना मिनन्नारि ० या अज़ीज़ु या ग़फ़्फ़ारू या क़ादियल हाज़ाति व या वलिय्यल हसनात ० व या राफ़िअस सय्यिआति इरफ़अ़ सय्यिआतिना बिजाहि यौमा आशूरा अ, या हय्यु या क़य्यूमु या ज़ल जलालि वल इकरामि ० व या मालिकि यौमिद्दीन ० इय्याका नअ़बुदु व

इय्याका नस्तईन ० फ़ी उमुरिद्दुनिया वल आख़िरति या रब्बल आलमीन ० या अल्लाहु बि हक़्क़ि इ़ज़्ज़ति रसूलिल्लाहि व हुरमतिहि व बर कतिहि व शानिहि व जलालिहि व जमालिहि नज्ज़िना मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद ० व नज्ज़िना मिनत ताऊनि वल वबाइ व मिन शर्रि कुल्लिल बलाइ बिहुरमति यौमा आशूरा अ, ला इलाहा इल्लल्लाहु रब्बुस समावाति वल अर्दि वमा बैनहुमा वमा तहतस सरा ० अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ० व सल्लल्लाहु अला ख़ैरि ख़लक़िहि मुहम्मदिंव व आलिहि व अस्हाबिहि अजमईना बिरहमतिका या अरहमर राहिमीन ० आमीन ० सुम्मा आमीन ०

मेअ़राज शरीफ़

हुज़ूरे अकरम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के बेशुमार मोजिज़ात और फ़ज़ाइलो कमालात में मेअ़रज़ शरीफ़ का मोजिज़ा इन्तिहाई ख़ुसूसियत का हामिल है, और चूँकि इस मोजिज़े में और कई मोजिज़े मौजूद हैं, इस लिये इसे जामिउल मोजिज़ात कहना बिल्कुल सही होगा।

नवाफ़िल शबे मेअ़राज

रजब की एक रात ज़िक्रो अज़कार और आमाले सालिहा में मशग़ूल रह कर गुज़ारने वाले के नामए आमाल

इबादत करो, और दिन में रोज़ा रखो।

इसमें शबे बेदारी के साथ ज़िक्रे ख़ुदा व रसूल, इबादतो रियाज़त, नमाज़ो तिलावत, सदक़ा व ख़ैरात तोबह व इस्तिग़फ़ार, सलातो सलाम और ज़्यारते कुबूर व ईसाले सवाब करना इन सब पर अमल करें, और दोनों जहाँ की बरकतों और नेअ़मतों से माला माल हों।

(1) पन्द्रहवीं शाबान क़ो गुस्ल करे, फिर सुर्मा लगाकर यह दुरूद शरीफ़ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَنَا مُحَمَّدٍ نُّوْرِكَ الْمُنِيْرِ
وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ○

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन नूरिकल मुनीरि व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम ०

अल्लाह ने चाहा तो इबादत में जिस्म थकान से महफ़ूज़ रहेगा और पूरे साल आँखों में कोई तकलीफ़ न होगी। (इंशाअल्लाहु तआला)

(2) सबसे पहले तौबा व इस्तिग़फ़ार करें किसी का हक़ हो तो फ़ौरन अदा करें कोई मुसलमान भाई नाराज़ हो तो राज़ी कर लें और आपस में मुसाफ़हा व मुआनक़ा करके दिल को बिलकुल साफ़ कर लें।

(3) सदक़ा व ख़ैरात करें कि हुसूले सवाब के साथ - साथ सदक़ात व ख़ैरात से बलाएं रद होती हैं।

(4) अहलो अयाल की ख़ातिर मदारात करें अच्छी और उम्दा ग़िज़ा खाएं और खिलाएं ख़ुसूसन हलवा पकाएं कि मेहबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की पसन्दीदा ग़िज़ा है।

(5) ज़ियारते क़ुबूर के लिये ख़ुसूसन इस रात को अहले सुन्नत के क़ब्रिस्तान जाना और तिलावत व ज़िक्रो अज़कार का ईसाले सवाब करना सुन्नते रसूल अलैहिस्सलाम है।

(6) ज़िक्रे ख़ुदा व रसूल की मेहफ़िलें मुनअक़िद करना वाज़ो नसीहत करना, हम्द व नअ़त व मनक़बत पढ़ना मीलादे पाक बयान करना और बारगाहे रिसालत में दुरूदो सलाम मअल क़याम (खड़े होकर) पेश करना बड़ी सआदत है। यह काम क़ुरआनो अहादीस से साबित ख़ुदा व रसूल को पसन्द और अहले सुन्नत व जमाअत का मअ़मूल हैं।

(7) **दुआ :** यह इबादत की जान बल्कि ख़ुद एक इबादत है इस लिये इस रात में ख़ूब दुआएं करनी चाहिये ख़ुसूसन दुआए निस्फ़ शाबान पढ़नी चाहिये।

दुआए निस्फ़ शअ़बान

اَللّٰهُمَّ يَا ذَالْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْهِ يَا ذَالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ
يَا ذَالطَّوْلِ وَالْاِنْعَامِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ ظَهْرُ اللَّاجِيْنَ ○
وَجَارُ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ ○ وَاَمَانُ الْخَائِفِيْنَ ○ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ
كَتَبْتَنِيْ عِنْدَكَ فِيْ اُمِّ الْكِتٰبِ شَقِيًّا اَوْ مَحْرُوْمًا

اَوْمَطْرُوْدًا اَوْ مُقَتَّرًا عَلَىَّ فِي الرِّزْقِ فَامْحُ اَللّٰهُمَّ بِفَضْلِكَ شَقَاوَتِيْ وَحِرْمَانِيْ وَطَرْدِيْ وَاقْتِتَارَ رِزْقِيْ وَاَثْبِتْنِيْ عِنْدَكَ فِيْ اُمِّ الْكِتٰبِ سَعِيْدًا مَّرْزُوْقًا مُّوَفَّقًا لِّلْخَيْرَاتِ ○ فَاِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ فِيْ كِتَابِكَ الْمُنَزَّلِ عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ يَمْحُو اللهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ وَ عِنْدَهٗ اُمُّ الْكِتٰبِ اِلٰهِيْ بِالتَّجَلِّي الْاَعْظَمِ فِيْ لَيْلَةِ النِّصْفِ مِنْ شَهْرِ شَعْبَانَ الْمُكَرَّمِ الَّتِيْ يُفْرَقُ فِيْهَا كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ وَّيُبْرَمُ اَنْ تَكْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَاءِ وَالْبَلْوَاءِ مَا نَعْلَمُ وَمَا لَا نَعْلَمُ ○ وَاَنْتَ بِهٖ اَعْلَمُ ○ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ ○

وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ
وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمْ

अल्लाहुम्मा या ज़ल मन्नि वला युमन्नु अलैहि 0 या ज़ल जलालि वल इकराम 0 या ज़त्तौलि वल इनआमि 0 ला इलाहा इल्ला अन्ता ज़हरुल्लाजीना 0 वजारुल मुस्तजिरीना 0 व अमानुल ख़ाइफ़ीना 0 अल्लाहुम्मा इन कुन्ता कतब तनी इन्दका फ़ी उम्मिल किताबि शक़ीय्यन अव महरूमन अव मतरूदन अव मुक़त्तरन अलय्या फ़िर्रिज़्क़, फ़म्हु अल्लाहुम्मा बि फ़दलिका शक़ावती व हिरमानी व तर्दी वक़ तितारा रिज़्क़ी, व असबितनी इन्दका

फ़ी उम्मिल किताबि सईदम मरज़ूक़म मुवफ़्फ़क़ल लिल ख़ैराति 0 फ़ इन्नका क़ुल्ता व क़ौलुकल हक़्क़ु फ़ी किताबिकल मुनज़्ज़लि अला लिसानि नबिय्यिकल मुरसल, यम्हुल्लाहु मा यशाउ व युस्बितु व इन्दहू उम्मुल किताबि, इलाही बित्तजल्लि यिल अअ्ज़म फ़ी लैलतिन्निस्फ़े मिन शहरि शअबानल मुकर्रम 0 अल्लती युफ़ रकु फ़ीहा कुल्लु अमरिन हकीमिंव व युबरमु, अन तकशिफ़ा अन्ना मिनल बलाइ वल बलवाइ मा नअ़लमु वमा ला नअ़लम, व अन्ता बिही अअ़लम, इन्नका अन्तल अअज़्ज़ुल अकरम व सल्लल्लाहो तआला अला सय्यिदिना मुहम्मदिंव व अला आलिही व अस्हाबिही वसल्लम, वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

शबे बरात के नवाफ़िल

(1) बाद नमाज़े मग़रिब छः रकअत नफ़्ल पढ़े, हर दो रकअत पर सलाम फेरने के बाद यासीन शरीफ़ एक बार और क़ुल हुवल्लाह इक्कीस बार पढ़े, पहली मरतबा सूरए यासीन दराज़िये उम्र के लिये, दूसरी मरतबा वुसअते रिज़्क़ के लिये और तीसरी मरतबा बलाएं दफ़ा होने के लिये पढ़ें।

(2) बाद नमाज़े इशा बारह रकअत नफ़्ल अदा करे। चार रकअत पर सलाम फैरे और हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद क़ुल हुवल्लाह दस मरतबा पढ़े, नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर तीसरा और चौथा कलिमा दस बार और दुरूद शरीफ़ सौ मरतबा पढ़ें।

(3) तक़र्रुब की नियत से (अल्लाह का कुर्ब हासिल करने की नियत से) गुस्ल करें फिर दो रकअत नमाज़ तहिय्यतुल वुज़ू पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतुल कुर्सी एक बार और कुल हुवल्लाह तीन बार पढ़े फिर उसके बाद आठ रकअत नमाज़ नफ़्ल दो सलाम से पढ़े, जिसकी हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद इन्ना अन्ज़ल नाहु एक बार, और कुल हुवल्लाह शरीफ़ पच्चीस बार पढ़े।

(4) दो दो रकअत करके सौ रकअत नफ़्ल पढ़े, इसकी बड़ी फ़ज़ीलत है, (सूरए फ़ातिहा के बाद जो सूरत याद हो पढ़ें) हदीस में आया है कि जो शख़्स इस रात में सौ रकअत नफ़्ल अदा करेगा तो अल्लाह तआला सौ फ़रिश्ते उसके लिये मुक़र्रर फ़रमा देगा। उनमें से तीस फ़रिश्ते उसको जन्नत की ख़ुश ख़बरी सुनाते रहेंगे, तीस फ़रिश्ते जहन्नम से बे ख़ौफ़ी की बशारत देते रहेंगे, तीस फ़रिश्ते बला व आफ़त को दफ़ा करते रहेंगे और दस फ़रिश्ते उस शख़्स को शैतान के फ़ितनों से महफ़ूज़ रखेंगे।

शबे बरात की फ़ातिहा और हलवा

अहले सुन्नत व जमाअत मौक़ा ब मौक़ा पाकीज़ा व मरग़ूब ग़िज़ाओं पर फ़ातिहा देकर ईसाले सवाब करते हैं, यह बिहम्दिही तआला क़ुरआनो अहादीस से साबित है और ख़ास तौर पर शबे बरात में अपने अज़ीज़ो अक़ारिब और दीगर बुज़ुर्गों की अरवाहे तय्यिबात को ईसाले सवाब

के लिये दीगर पसन्दीदा ग़िज़ाओं के अलावा हलवे पर फ़ातिहा देते हैं, यह जाइज़ व मुबाह ही नहीं बल्कि मस्नून व मुस्तहब है।

इस सिलसिले में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा रिवायत फ़रमाते हैं कि शबे बरात में मुसलमानों की रूहें अपने अपने घरों पर आती हैं और कहती हैं।

ऐ घर वालो ! हमारे ऊपर रहम करो, हम पर महरबानी करो आज की रात हमारे लिये कुछ सदक़ा व ख़ैरात करो, क्यों कि हम ईसाले सवाब के मोहताज हैं हमारे नाम से आमाल बन्द कर दिये गए मगर तुम्हारे नाम से आमाल जारी हैं, (फिर फ़रमाते हैं) अगर घर वाले हस्बे इस्तिताअत सदक़ा व ख़ैरात फ़ातिहा व ईसाले सवाब करते हैं तो यह रूहें ख़ुश ख़ुश उसके हक़ में दुआए ख़ैर करती हुई वापस चली जाती हैं (और फ़रमाते हैं) अगर यह रूहें कुछ नहीं पाती हैं तो हसरत व मायूसी के साथ वापस होती हैं।

बहर हाल मोमिन पाक, हलवा व उसके अज्ज़ा यानी रवा मेदा घी शकर और मेवाजात वग़ैरह सब पाक और जाइज़ फिर उस पर क़ुरआने पाक की तिलावते पाक के बाद उसका सवाब पाक लोगों की पाक रूहों को पहुँचाया जाता है और हदीसे पाक से साबित कि रसूले पाक को हल्वा पसन्द था इस लिये पाक लोग पाकीज़ा हलवा

पकाते भी हैं और खाते भी हैं और खिलाते भी हैं। सच फ़रमाया कुरआने करीम ने :

وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۝

वत्तिय्यिबातु लित्तय्यिबीना वत्तय्यिबूना लित्तय्यिबात

(पारा नं. 18)

फिर भला बताइये इतनी पाकीज़ा और नफ़ीस चीज़ को अगर कोई नापाक या नाजाइज़ बताए यह कहाँ का इन्साफ़ है ? (खाना ना जाइज़ नहीं समझते)

पाकीज़ा चीज़ों और शीरीनी व तबर्रुकात को नजिस नाजाइज़ कहने लिखने और समझने वाले यह कहा करते हैं कि सामने रखकर फ़ातिहा देना ग़लत है। तो मैं उनको इल्ज़ामी जवाब देता हूँ कि सामने रखना तुम्हारे नज़दीक ग़लत है तो पीठ के पीछे रख लिया करो, लेकिन दुरूद फ़ातिहा करो तो सही। ख़ुदा हम सबको हक़ समझने, हक़ कहने और हक़ पर क़ाइम रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (आमीन)

शबे क़द्र की फ़ज़ीलत

शबे क़द्र की फ़ज़ीलत और अज़मत अल्लाहु अकबर कौन बयान कर सकता है इसकी बहतरी व बरतरी का तो क़ुरआने करीम ख़ुत्बा पढ़ रहा है सूरए क़द्र पढ़िये और इसकी अज़मतों का एतिराफ़ कीजिये।

नवाफ़िले शबे क़द्र

बड़े ख़ुश नसीब हैं वह मुसलमान जो शबे क़द्र जैसी फ़ज़ीलत व अज़मत वाली रात पाएं और उसकी क़द्र जान कर नमाज़ो तिलावत ज़िक्रो नवाफ़िल, और दुरूदो सलाम में मसरूफ़ रहें और शबे बेदारी करें इसलिये ख़ुदा तौफ़ीक़ दे तो।

(1) शबे क़द्र में चार रकअत नफ़्ल एक सलाम से पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़द्र (इन्ना अन्ज़लना) तीन मरतबा और क़ुल हुवल्लाह पचास बार पढ़े नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद एक बार तस्बीह पढ़े फिर दुआ मांगे।

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ ۝

सुब्हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर ०

तम्बीह : हर नमाज़ नफ़्ल में हर दो रकअत पर क़अदा करना फ़र्ज़ है इस लिये जब क़अदे में बैठें तो अत्तहिय्यात के साथ दुरूद शरीफ़ और दुआ पढ़े फिर तीसरी रकअत के लिये खड़े हों तो पहले सना पढ़े फिर सूरए फ़ातिहा शुरू करें, इस बात का हमेशा ख़याल रखें आम तौर पर लोग इससे ग़ाफ़िल हैं।

(2) दो रकअत नफ़्ल अदा करें, दोनों रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़द्र एक बार और क़ुल हुवल्लाह

बीस बार पढ़े, नमाज़ के बाद फिर कुल हुवल्लाह पाँच सौ मरतबा और

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَیْہِ ۝

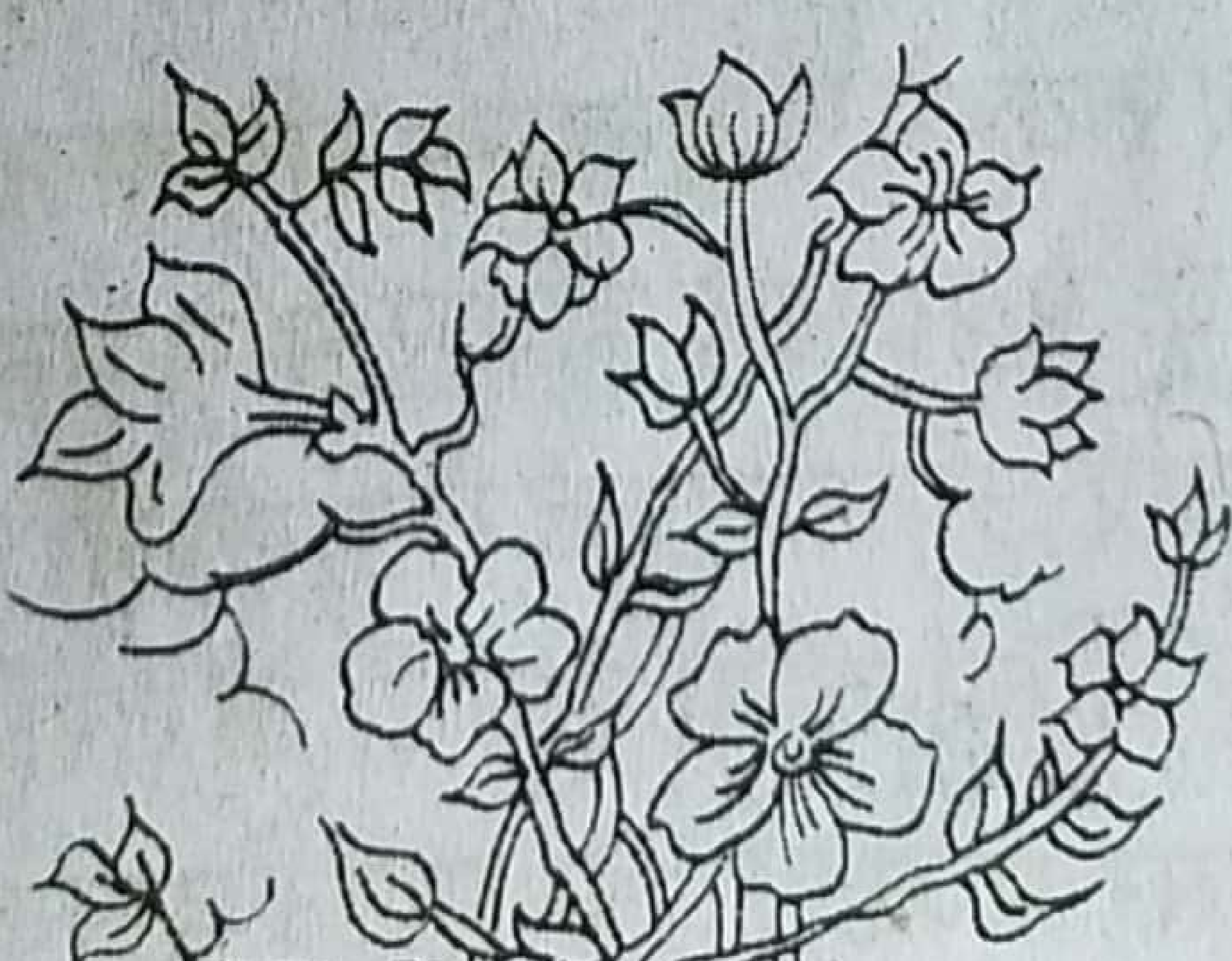
अस्तग़ फ़िरुल्लाहा रब्बी मिन कुल्लि ज़मबिंव व अतूबु इलैहि ० सौ मरतबा और दुरूद शरीफ़ सौ मरतबा पढ़ कर दुआ मांगे।

(3) दो दो रकअत की नियत से सौ रकअत नफ़्ल अदा करे, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद एक बार सूरए क़द्र और तीन बार कुल हुवल्लाह पढ़े और हर दो रकअत पर सलाम के बाद दुरूद शरीफ़ दस बार पढ़े।

(4) वह दुआ जिसको सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा को शबे क़द्र में विर्द करने के लिये तालीमा फ़रमाई, इसे ख़ूब पढ़ें दुआ यह है -

اَللّٰھُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ یَا غَفُوْرُ ۝

अल्लाहुम्मा इन्नका अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल अफ़वा फ़अफ़ु अन्नी या ग़फ़ूर ०



फ़ज़ाइले सलातुत तस्बीह

दीनो दुनिया के बे शुमार फ़ाएदे हासिल करने का बहतरीन ज़रीआ सलातुत तस्बीह है इसकी अदाएगी का मख़सूस वक़्त नहीं है बल्कि हर मौसम और वक़्त में अदा की जा सकती है। (सिर्फ़ मकरूह औक़ात में न पढ़े) हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने अपने चचा को तलीम फ़रमाई तो फ़रमाया इसे रोज़ाना या हफ़्ते में या महीने में या साल में वरना उम्र भर में एक बार ज़रूर अदा करें, दीगर नवाफ़िल के अलावा फ़ज़ीलत वाले दिन व रात में सलातुत तस्बीह अदा करना इकसीर है (बेहद बे इन्तिहा फ़ायदे मन्द है)

सलातुत तस्बीह का आसान तरीक़ा

नियत की मैंने चार रकअत नमाज़ नफ़्ल सलातुत तस्बीह की, वास्ते अल्लाह तआला के, मुंह मेरा काबे शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर और **सना** पढ़ने के बाद 15 बार तस्बीह पढ़े, फिर **क़िरत** के बाद रुकूअ़ से पहले 10 बार फिर रुकूअ़ में **सुब्हाना रब्बियल अज़ीम** के बाद 10 बार, फिर रुकूअ़ से खड़े होकर **समिअल्लाहु लिमन हमिदह** के बाद 10 बार, फिर सज्दे में **सुब्हाना रब्बियल अअ़ला** के बाद 10 बार, फिर दोनों सज्दों के दरमियान **जल्से** में 10 बार, फिर **दूसरे सज्दे** में 10 बार। इस तरह हर रकअत में

75 बार तस्बीह पढ़े।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ○

सुब्हानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि वलाइलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर 0

नोट : रुकू व सज्दे में हमेशा पढ़ी जाने वाली तस्बीह भी पढ़े -

हिदायत : दूसरी और चौथी रकअत तस्बीह से शुरू करे।

क़अदा ऊला में अत्तहिय्यात के बाद दुरूद शरीफ़ व दुआ पढ़ कर खड़े हो, तीसरी रकअत में पहले सना पढ़ फिर तस्बीह पढ़े।

किसी रुक्न की तस्बीह रह जाए तो अगले रुक्न में पूरी कर लें, तस्बीह का शुमार उंगली दबाकर करें, जो सूरह चाहे पढ़ सकते हैं, हाँ सूरए तकासुर, सूरए अस्र, सूरए काफ़िरून और सूरए इख़्लास पढ़ना बहतर है।

सूरए तकासुर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ○ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ○ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ○ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ○ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ○ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ○ ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ○

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

अल्हाकुमुत तकासुरु हत्ता ज़ुर तुमुल मक़ाबिर 0 कल्ला सौफ़ा तअ़लमून 0 सुम्मा कल्ला सौफ़ा तअ़लमून कल्ला लौ तअ़लमूना इल्मल यक़ीन 0 ल त र वुन्नल जहीमा 0 सुम्मा ल त र वुन्नहा ऐनल यक़ीन 0 सुम्मा लतुस अलुन्ना यौमा इज़िन अनिन नईम 0

सूरए अस्र

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

وَالۡعَصۡرِ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَفِىۡ خُسۡرٍ ○ اِلَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوۡا بِالۡحَقِّ وَتَوَاصَوۡا بِالصَّبۡرِ ○

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम 0

वल असरि इन्नल इन्साना लफ़ी ख़ुसरिन 0 इल्लल्लज़ीना आमनू व अमिलुस सालिहाति व तवासव बिल हक़्क़ि व तवासव बिस्सबरि 0

सूरए काफ़िरून

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

قُلۡ يٰۤاَيُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ ○ لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ ○ وَلَاۤ
اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ○ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدۡتُّمۡ وَلَاۤ
اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ○ لَكُمۡ دِيۡنُكُمۡ وَلِىَ دِيۡنِ ○

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम ०

कुल या अय्युहल काफ़िरूना ० ला अअ़बुदु मा तअ़बुदून ० वला अन्तुम आबिदुना मा अअ़बुद ० वला अना आबिदुम मा अबत्तुम ० वला अन्तुम आबिदूना मा अअ़बुद ० लकुम दीनुकुम वलि यदीन ०

सूरए क़द्र

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰهُ فِىۡ لَيۡلَةِ الۡقَدۡرِ ۝ وَمَاۤ اَدۡرٰكَ مَا لَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ ۝ لَيۡلَةُ الۡقَدۡرِ خَيۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَهۡرٍ ۝ تَنَزَّلُ الۡمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوۡحُ فِيۡهَا بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ ۚ مِنۡ كُلِّ اَمۡرٍ ۝ سَلٰمٌ هِىَ حَتّٰى مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ۝

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम ०

इन्ना अन्ज़लनाहु फ़ी लैलतिल क़दरि वमा अद्राका मा लैलतुल क़द्र ० लैलतुल क़दरि ख़ैरुम मिन अलफ़ि शहर ० तनज़्ज़लुल मलाइकतु वर्रूह ० फ़ीहा बि इज़नि रब्बिहिम मिन कुल्लि अमरिन सलाम ० हिया हत्ता मतलइल फ़ज्र ०

फ़र्ज़ियते नमाज़

ईमान और अक़ीदा दुरुस्त करने के बाद तमाम फ़राइज़ से अहम फ़र्ज़ और तमाम इबादात से अफ़ज़लो आला इबादत नमाज़ है । कुरआनो अहादीस में इसकी बहुत ताकीद आई है, जा बजा इसकी अहमियतो फ़ज़ीलत बयान की गई है, ख़ुदाए तआला कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है, नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो (पारा नं. 1, रुकू नं. 5) और फ़रमाता है यह किताब (कुरआन) परहेज़गारों के लिये हिदायत है, जो ग़ैब पर ईमान लाए और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और हमने जो दिया है, उनमें से हमारी राह में ख़र्च करते हैं। (पारा नं. 1, रुकू नं . 1)

एक जगह इरशाद फ़रमाता है

निगेहबानी करो सब नमाज़ों की और बीच की नमाज़ की और खड़े हो अल्लाह के हुज़ूर अदब से।

इसी तरह शारिए इस्लाम नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं, इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है, (1) इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम उसके ख़ास बन्दे और रसूल हैं। (2) नमाज़ क़ाइम करना। (3) ज़कात देना। (4) हज करना। (5) रमज़ान के रोज़े रखना। दूसरी हदीस में है हज़रते मआज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला

अलैहि वसल्लम से पूछा कि मुझे ऐसा अमल बताएं जो मुझे जन्नत में ले जाए और जहन्नम से बचाए, आपने फ़रमाया अल्लाह तआला की इबादत कर और उसके साथ किसी को शरीक न कर और नमाज़ क़ाइम रख, और ज़कात दे और रमज़ान का रोज़ा रख और बैतुल्लाह (ख़ानए काबा) का हज कर। एक और हदीसे पाक में है कि नमाज़ दीन का सुतून है, जिसने इसको क़ाइम रखा उसने दीन को क़ाइम रखा और जिसने इसको तर्क किया गोया उसने दीन को ढा दिया। एक मक़ाम पर रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि हर चीज़ की एक पहचान है और ईमान की पहचान नमाज़ है।

फ़ज़ाइले नमाज़

क़ुरआनो हदीस में नमाज़ की बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत बयान की गई है, चुनाँचे ख़ुदाए तआला इरशाद फ़रमाता है, बेशक नमाज़ बे हयाई और बुरी बातों से रोकती है।

(पारा नं. 21, रुकू नं. 1)

हदीस : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हु से रिवायत है, उनका बयान है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बताओ अगर तुम लोगों में किसी के दरवाज़े पर नहर हो और वह उनमें रोज़ाना पांच मरतबा ग़ुस्ल करता हो तो क्या उसके बदन पर कुछ मैल बाक़ी रह जाएगा ? सहाबए

किराम ने अर्ज़ किया ऐसी हालत में उसके बदन पर कुछ भी मैल बाक़ी नहीं रहेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बस यही कैफ़ियत पांच नमाज़ों की है अल्लाह तआला उनके सब गुनाहों को मिटा देता है। एक जगह हज़रते अबू ज़र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम एक रोज़ सर्दी के मौसम में जब कि दरख़्तों के पत्ते गिर रहे थे (यानी पतझड़ का ज़माना था) बाहर तशरीफ़ ले गए तो आपने एक दरख़्त की दो शाख़ें पकड़ीं (और उन्हें हिलाया) तो उन टहनियों से पत्ते गिरने लगे, आपने फ़रमाया, ऐ अबू ज़र ! हज़रते अबू ज़र ने अर्ज़ किया हाज़िर हूँ या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैक़ा वसल्लम, आपने फ़रमाया, जब मुसलमान बन्दा ख़ालिस अल्लाह तआला के लिये नमाज़ पढ़ता है तो उसके गुनाह इस तरह झड़ जाते हैं, जैसे कि ये पत्ते दरख़्त से झड़ रहे हैं।

हज़रते अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि हुज़ूर ने फ़रमाया, जो शख़्स अपने घर में तहारत (वुज़ू, गुस्ल) करके फ़र्ज़ अदा करने के लिये मस्जिद को जाता है, तो एक क़दम पर एक गुनाह मिट जाता है, दूसरे पर एक दर्जा बलन्द होता है। (बुख़ारी, मुस्लिम) हज़रत उबादह इब्ने सामित रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने बन्दों पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ कीं, जिसने अच्छी तरह वुज़ू

किया और वक़्त में अदा किया व रुकूओ सुजूद को पूरी तरह अदा किया तो उसके लिये अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मए करम पर यह अहद कर लिया है कि उसे बख़्श दे और जिसने ऐसा नहीं किया तो उसके लिये कोई अहद नहीं चाहे बख़्श दे चाहे अज़ाब दे। (अबू दाऊद)

एक और हदीस में उम्मुल मोमिनीन हज़रते आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा से रिवायत है कि हुज़ूर फ़रमाते हैं कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है अगर वक़्त में नमाज़ क़ाइम रखे तो मेरे बन्दे को मेरे ज़िम्मए करम पर अहद है कि उसे अज़ाब न दूं और बेहिसाब जन्नत में दाख़िल करुँ। (हाकिम)

तारिके नमाज़ पर वईदें

नमाज़ छोड़ने वाले और उनको क़ज़ा करने वालों के लिये सख़्त और शदीद वईदें (सज़ाएँ) की गई हैं, नमाज़ का बिल्कुल तर्क कर देना तो सख़्त हलाकत ख़ेज़ है उनको वक़्तों पर अदा न करने वालों के लिये ख़ुदा फ़रमाता है वैल है उन नमाज़ियों के लिये जो अपनी नमाज़ से बे ख़बर हैं, वक़्त गुज़ार कर पढ़ते हैं, (क़ुरआन) वैल, जहन्म की एक वादी का नाम है, जिसकी सख़्ती से जहन्नम भी पनाह मांगता है, नमाज़ क़ज़ा करके पढ़ने वालों को उसमें डाला जाएगा। (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) और फ़रमाता है उनके बाद कुछ नाख़लफ़ पैदा हुए, जिन्होंने

नमाज़ें ज़ाए कर दीं और अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशों का इत्तिबा किया अनक़रीब उन्हें गय्य में डाला जाएगा। (कुरआन, पारा 16, रुकू नं. 7) ग़य्या जहन्नम में एक वादी है जिस की गर्मी और गहराई सबसे ज़्यादा है, उसमें एक कुआँ है, जिसका नाम हबदब है। जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल उस कुंए को खोल देता है, जिससे, वह बदस्तूर भड़कने लगती है, यह कुंआ बे नमाज़ियों, ज़ानियों, शराबियों, सूद (ब्याज) खाने वालों और मां बाप को ईज़ा (तकलीफ़) देने वालों के लिये है। (ख़ुदा अपने महबूबे पाक के सदक़े में ऐसे दर्द नाक अज़ाबों से महफ़ूज़ रखे आमीन।) नमाज़ तर्क करने वालों के लिये हदीसे पाक में और कैसी सख़्त वईदें बयान की गई हैं, उन्हें भी मुलाहज़ा कीजिये। हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अलआस रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि नबिय्ये करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने एक रोज़ नमाज़ का ज़िक्र किया तो फ़रमाया, जो शख़्स नमाज़ की पाबन्दी करेगा तो नमाज़ उसके लिये नूर का सबब होगी, कमाले ईमान की दलील होगी और क़ियामत के दिन बख़्शिश का ज़रीआ बनेगी और जो नमाज़ की पाबन्दी नहीं करेगा, उसके लिये न तो नूर का सबब होगी न कमाले ईमान की दलील होगी, और न बख़्शिश का ज़रीआ होगी और वह (बे नमाज़ी) क़ारून, फ़िरऔन, हामान और उबय्यि इब्ने ख़लफ़ (बद तरीन

काफ़िरों) के साथ होगा। हज़रत अबू नुऐम हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहो तआला अन्हु से रिवायत करते हैं हुज़ूर ने फ़रमाया, जिसने क़सदन नमाज़ छोड़ी जहन्नम के दरवाज़े पर उसका नाम लिख दिया जाता है। हज़रत इमाम अहमद, उम्मे, अयमन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रावी कि हुज़ूर ने फ़रमाया क़स्दन नमाज़ तर्क न करो कि जो क़स्दन नमाज़ तर्क कर देता है, अल्लाहो रसूल उससे बरिज़्ज़िम्मा हैं। हज़रते उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर फ़रमाते हैं कि जिसने नमाज़ छोड़ दी उसका कोई दीन नहीं नमाज़ दीन का सुतून है। (बैहक़ी)

फ़िक़ही मसाइल

मस्अला : हर मुकल्लफ़ यानी आक़िल बालिग़ पर नमाज़ फ़र्ज़े ऐन है इसकी फ़र्ज़ियत का मुन्किर काफ़िर है और जो क़स्दन छोड़े अगरचेह एक ही वक़्त की वह फ़ासिक़ है, और जो न पढ़ता हो वह क़ैद किया जाए, यहाँ तक कि तौबह करे और नमाज़ पढ़ने लगे बल्कि अइम्मए सलासा इमामे मालिक, इमामे शाफ़ई और इमाम अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहो अन्हुम के नज़दीक बादशाहे इस्लाम को उसको (बेनमाज़ी) क़त्ल का हुक्म है। (दुर्रे मुख़्तार, बहारे शरीअत)

मस्अला : बच्चे की उम्र जब सात बरस की हो जाए तो उसे नमाज़ पढ़ना सिखाया जाए, और जब दस बरस का हो जाए तो मारकर पढ़वाना चाहिये। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

मस्अला : नमाज़ ख़ालिस बदनी इबादत है, इसमें

नयाबत जारी नहीं हो सकती यानी एक की तरफ़ से दूसरा नहीं पढ़ सकता न यह हो सकता है कि ज़िन्दगी में नमाज़ के बदले कुछ माल ब तौरे फ़िदया अदा करे, अलबत्ता अगर किसी पर कुछ नमाज़ें रह गई हैं और इन्तिक़ाल कर गया और वसिय्यत कर गया कि उसकी नमाज़ों का फ़िदया अदा किया जाए तो उम्मीद है कि इंशाअल्लाह तआला कुबूल होगा, और बे वसिय्यत भी वारिस उसकी तरफ़ से दे कि कुबूल और मुआफ़ी की उम्मीद है।

बीमार की नमाज़ का बयान

अगर बीमारी के सबब खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ सकता कि मर्ज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा या चक्कर आते हैं या शदीद दर्द है, जो बरदाश्त के क़ाबिल न हो वग़ैरह वग़ैरह। इन सब सूरतों में बैठ कर नमाज़ पढ़े, अगर किसी चीज़ की टैक, लगाकर खड़ा हो सकता है तो फ़र्ज़ है कि खड़ा होकर पढ़े इस सूरत में बैठ कर नमाज़ पढ़ेगा तो नहीं होगी। अगर कुछ देर खड़ा हो सकता है अगरचेह इतना ही कि खड़ा होकर अल्लाहु अकबर कह ले तो फ़र्ज़ है कि खड़ा होकर इतना कहे फिर बैठे वरना नमाज़ न होगी (बहारे शरीअत)

बीमारी के सबब अगर रुकू सज्दा भी न कर सकता हो तो इशारे से करे मगर रुकू के इशारे से सज्दे के इशारे में सर को ज़्यादा झुकाएं अगर बैठ कर भी नमाज़ न पढ़ सकता हो तो लेट कर नमाज़ पढ़े, इस तरह कि चित लेटकर क़िब्ले

की तरफ़ पांव करे, मगर पांव न फैलाएं बल्कि घुटने खड़े रखे और सर के नीचे तकिया वग़ैरह रखकर ज़रा ऊँचा कर ले और रुकू व सज्दा सर झुका कर इशारे से करें यह सूरत अफ़ज़ल है और यह भी जाइज़ है कि दाहने या बाएं करवट लेटकर मुंह क़िब्ले की तरफ़ करे।

इससे उन लोगों को सबक़ लेना चाहिये कि जो ज़रा सी तकलीफ़ में बैठ कर नमाज़ पढ़ना शुरू कर देते हैं, हालांकि घर से चल कर मस्जिद आते हैं और अगर घर में हैं तो अपनी ज़रूरियात के लिये तो चल फिर लेते हैं लेकिन नमाज़ बैठ कर पढ़ते हैं, ख़ुदा नेक समझ अता फ़रमाए। आमीन।

मुसाफ़िर की नमाज़ का बयान

शरीअत में मुसाफ़िर वह शख़्स है जो तीन रोज़ की राह तक जाने के इरादे से बस्ती से बाहर हो जाए।

मील के हिसाब से तीन रोज़ के रास्ते की मिक़दार 57 3/8 मील नए हिसाब से तक़रीबन 92 कि.मी. है।

अगर कोई शख़्स तीन रोज़ की राह के इरादे से निकला मगर यह भी इरादा किया कि दरमियान में एक दिन ठहरुँगा तो अगर ठहरना ज़िमनी तौर पर है तो मुसाफ़िर रहेगा और इस इरादे से निकला दो दिन की राह पर जाता हूँ फिर वहाँ से एक दिन की राह पर जाऊँगा तो मुसाफ़िर न होगा।

मुसाफ़िर पर वाजिब है कि क़स्र करे यानी ज़ोहर, अस्र और इशा की चार रकअत वाली फ़र्ज़ नमाज़ को दो पढ़े कि इसके हक़ में दो ही रकअत पूरी नमाज़ है, अगर कोई

की तरफ़ पांव करे, मगर पांव न फैलाएं बल्कि घुटने खड़े रखे और सर के नीचे तकिया वग़ैरह रखकर ज़रा ऊँचा कर ले और रुकू व सज्दा सर झुका कर इशारे से करें यह सूरत अफ़ज़ल है और यह भी जाइज़ है कि दाहने या बाएं करवट लेटकर मुंह क़िब्ले की तरफ़ करे।

इससे उन लोगों को सबक़ लेना चाहिये कि जो ज़रा सी तकलीफ़ में बैठ कर नमाज़ पढ़ना शुरू कर देते हैं, हालांकि घर से चल कर मस्जिद आते हैं और अगर घर में हैं तो अपनी ज़रूरियात के लिये तो चल फिर लेते हैं लेकिन नमाज़ बैठ कर पढ़ते हैं, ख़ुदा नेक समझ अता फ़रमाए। आमीन।

मुसाफ़िर की नमाज़ का बयान

शरीअत में मुसाफ़िर वह शख़्स है जो तीन रोज़ की राह तक जाने के इरादे से बस्ती से बाहर हो जाए।

मील के हिसाब से तीन रोज़ के रास्ते की मिक़दार 57 3/8 मील नए हिसाब से तक़रीबन 92 कि.मी. है।

अगर कोई शख़्स तीन रोज़ की राह के इरादे से निकला मगर यह भी इरादा किया कि दरमियान में एक दिन ठहरूँगा तो अगर ठहरना ज़िमनी तौर पर है तो मुसाफ़िर रहेगा और इस इरादे से निकला दो दिन की राह पर जाता हूँ फिर वहाँ से एक दिन की राह पर जाऊँगा तो मुसाफ़िर न होगा।

मुसाफ़िर पर वाजिब है कि क़स्र करे यानी ज़ोहर, अस्र और इशा की चार रकअत वाली फ़र्ज़ नमाज़ को दो पढ़े कि इसके हक़ में दो ही रकअत पूरी नमाज़ है, अगर कोई

क़स्दन (जानबूझ) कर चार पढ़ेगा तो गुनाहगार होगा तौबह करे। अगर चार पढ़ी और दोनों क़अदे क़ये तो फ़र्ज़ अदा हो गया और आख़री दो रकअतें नफ़्ल हो गईं फ़ज्र, मग़रिब, और वित्र में क़स्र नहीं। सुन्नतों में क़स्र नहीं है अगर मौक़ा है तो पूरी पढ़े वरना मुआफ़ है।

मुसाफ़िर जब बस्ती की आबादी से बाहर हो जाए तो उस वक़्त से नमाज़ में क़स्र शुरू करे बस स्टेण्ड और रेल्वे स्टेशन अगर आबादी से बाहर हो और तीन दिन की राह तक सफ़र का इरादा भी हो तो बस स्टेण्ड व रेल्वे स्टेशन पर क़स्र करेगा वरना नहीं।

मुसाफ़िर जब तक किसी जगह पन्द्रह दिन या इससे ज़्यादा ठहरने की नियत न करे या अपनी बस्ती में न पहुँच जाए क़स्र करता रहे, मुसाफ़िर अगर मुक़ीम के पीछे नमाज़ पढ़े तो पूरी पढ़े। क़स्र न करे और अगर मुक़ीम, मुसाफ़िर के पीछे नमाज़ पढ़े तो इमाम के सलाम फेरने के बाद अपनी बाक़ी दो रकअत पढ़े और इन रकअतों में क़िरात बिल्कुल न करे बल्कि सूरए फ़ातिहा पढ़ने की मिक़दार ख़ामोश खड़ा रहे।

मील के हिसाब से तीन रोज़ के रास्ते की मिक़दार 57 3/8 मील है। (बहारे शरीअत)

नोट : 57 3/8 मील नए हिसाब से तक़रीबन 92 कि.मी. है। **(अनवारे शरीअत)**

क़ज़ा नमाज़
और क़ज़ाए उमरी का बयान

बिला उज़्रे शरई नमाज़ क़ज़ा करना सख़्त गुनाह है जल्द से जल्द अदा करना और तौबह करना फ़र्ज़ है। मकरूह वक़्त के अलावा किसी वक़्त भी क़ज़ा नमाज़ पढ़ सकते हैं। साहिबे तरतीब पर तरतीब के साथ क़ज़ा नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है (जिसके ज़िम्मे सिर्फ़ छः नमाज़ों से कम क़ज़ा हो, वह साहिबे तरतीब है) साहिबे तरतीब बग़ैर क़ज़ा पढ़े, जमाअत में शरीक नहीं हो सकता। क़ज़ाए उमरी में सिर्फ़ फ़र्ज़ और वित्र की क़ज़ा पढ़ी जाएगी। पहले ज़रूरी है कि क़ज़ा नमाज़ों का हिसाब करे बालिग़ होने के बाद जिस क़द्र नमाज़ें क़ज़ा हुई उनको अलग अलग शुमार करके जमा कर ले यानी फ़ज्र ज़ोहर, अस्र, मग़रिब और इशा व वित्र की कुल तादाद और यह हिसाब आसान है इस लिये कि आप अपनी ज़िन्दगी के बड़े से बड़े हिसाब अन्दाज़े से या कम ज़्यादा करके निपटा सकते हैं तो क़ज़ा नमाज़ों का हिसाब भी अन्दाज़े से किया जा सकता है।

(कुछ ज़्यादा हो जाए कोई हरज नहीं कम न हो।)

जैसे आपने हिसाब किया कि फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा की तादाद दो हज़ार है, ज़ोहर की एक हज़ार है इसी तरह तमाम नमाज़ों की तादाद हिसाब करके लिख लें फिर आप फ़ज्र के वक़्त फ़ज्र की क़ज़ा, ज़ोहर के वक़्त, ज़ोहर की क़ज़ा, इसी तरह नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ते रहे और हिसाब से

कम करते रहे, क़ज़ाए उमरी के लिये नियत इस तरह करे।

मेरे ज़िम्मे जितनी फ़ज्र की नमाज़ बाक़ी हैं उनमें से पहली नमाज़ अदा करने की नियत की।

इसी तरह हर नमाज़ में नियत करते रहें। फ़ज्र की पढ़ना हो तो फ़ज्र का नाम लें, ज़ोहर की पढ़ना हो तो ज़ोहर इसी तरह अस्र, मग़रिब, इशा और वित्र की नियत करें एक तरीक़ा यह भी है कि पहले तमाम फ़ज्र की क़ज़ा पढ़ ली जाए फिर ज़ोहर की तमाम क़ज़ा इसी तरह फिर अस्र, मग़रिब इशा और वित्र की पढ़ी जा सकती हैं, हिसाब रखना ज़रूरी है। अगर मुसाफ़िर होने की हालत की नमाज़ें हों तो अपने वतन में भी चार फ़र्ज़ की जगह दो रकअत क़स्र की पढ़ेगा।

मस्अला : क़ज़ा नमाज़ें नवाफ़िल से अहम हैं यानी जिस वक़्त नफ़्ल पढ़ता है यानी ज़ोहर में आख़िर के दो नफ़्ल अस्र की शुरू की चार सुन्नत, मग़रिब में आख़िर के दो नफ़्ल, इशा के शुरू की चार सुन्नत और वित्र से पहले और बाद के दो दो नफ़्ल, इन्हें छोड़कर इनके बदले क़ज़ाए पढ़ें ताकि बरिज़्ज़िम्मा हो जाए, इसी तरह जागने वाली रातों में नवाफ़िल की जगह क़ज़ा नमाज़ पढ़े तो बहतर है। क्यूँकि क़ज़ा नमाज़ जब तक पूरी न हो जाए नफ़्ल क़ुबूल नहीं होती है

जिसके ज़िम्मे फ़र्ज़ नमाज़ की क़ज़ा बाक़ी हो और वह नफ़्ल नमाज़ें अदा करने की फ़िक्र में लगा रहे उसकी मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स पर बहुत सा क़र्ज़ बाक़ी हो और वह क़र्ज़ अदा करने के बजाए लोगों में ख़ैरात तक़सीम करता फिरे।

चार मशहूर फ़रिश्तों के नाम

(1) हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम अल्लाह के अहकाम नबियों व रसूलों तक पहुँचाते थे।

(2) हज़रत मीकाइल अलैहिस्सलाम बारिश बरसाने और मख़लूक़े.ख़ुदा तक रिज़्क़ पहुँचाने के काम पर मुक़र्रर हैं

(3) हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम क़ियामत के दिन सूर फूकेंगे।

(4) हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम रूह निकालने के काम पर मुक़र्रर हैं।

चार मशहूर ख़लीफ़ा के नाम

(1) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो अन्हु
(2) हज़रत उमर फ़ारुक़े आज़म रज़ियल्लाहो अन्हो
(3) हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
(4) हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

चार मशहूर इमामों के नाम

(1) हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो (2) हज़रत इमामे शाफ़ई रज़ियल्लाहो तआला अन्हो (3) हज़रत इमामे मालिक रज़ियल्लाहो तआला अन्हु (4) हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो।

क़ब्र के सवालात

1. ''मंर्रब्बुका'' यानी तेरा रब कौन है ?

2. ''मा दीनु का'' यानी तेरा दीन क्या है ?

3. ''मा तक़ूलु फ़ी हक़्क़ि हाज़र्रजुल'' यानी इस मर्द हक़ के बारे में क्या कहता है ?

पहले सवाल का जवाब **रब्बियल्लाह** यानी मेरा रब अल्लाह है।

दूसरे सवाल का जवाब **दीनियल इस्लाम** यानी मेरा दीन इस्लाम है।

तीसरे सवाल का जवाब **हुवा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम** यानी यह तो हमारे आक़ा मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम हैं।

इस्लामी महीनों के नाम

(1) मुहर्रम (2) सफ़र (3) रबीउल अव्वल (4) रबीउल आख़िर (5) जुमादल उला (6) जुमादल उख़रा (7) रजब (8) शाबान (9) रमज़ान (10) शव्वाल (11) ज़ीक़अ़दह (12) ज़िलहिज्जा।

मोहर्रम की दस तारीख़ को इमामुश शुहदा हज़रत इमामे हुसैन और दीगर शोहदाए करबला रिज़वानुल्लाहि तआला अन्हुम अजमईन के नाम से फ़ातिहा दी जाती है।

माहे सफ़र की 25 तारीख़ को इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमह का

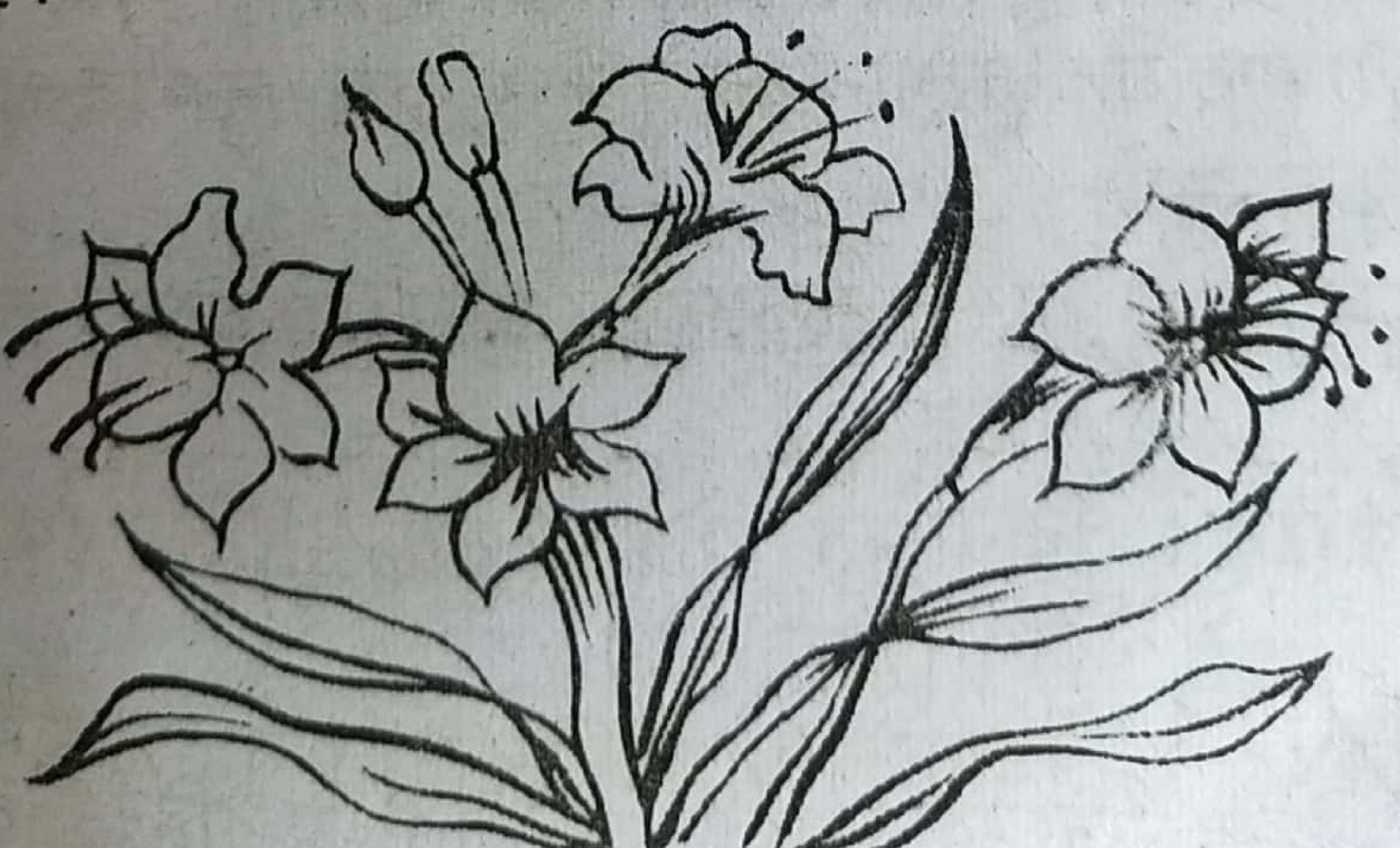
यौमे विसाल है आपकी बारगाह में आशिक़ाने रसूल हदयए ईसाले सवाब करते हैं।

रबीउल अव्वल शरीफ़ की बारह तारीख़ मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम का यौमे पैदाइश और यौमे विसाल है। आपकी बारगाहे आलिया में नज़रानए अक़ीदत पेश करते हैं।

रबीउल आख़िर की 11 तारीख़ को पीराने पीर दस्तगीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी ग़ौसे पाक की न्याज़ दिलाई जाती है। (रज़ियल्लाहो तआला अन्हो)

रजब की 6 तारीख़ को हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो और इसी माह की 15 या 22 तारीख़ को हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहो अन्हो के नाम से फ़ातिहा होती है।

शअ़बान माह की 14 तारीख़ को आशिक़े रसूल हज़रत उवैसे क़रनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की फ़ातिहा होती है।



दीन व दुनिया की भलाई पर

एक ईमान अफ़रोज़ मुकालमा

अज़ाब दो क़िस्म के होते हैं ज़मीनी और आसमानी। ज़मीनी आफ़तों के लिये तो अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसूल बताए हैं, रही आसमानी आफ़तें तो उनका सिर्फ़ एक ही हल है तौबह। फ़र्द हो या क़ौम, कमोबेश **25 मसाइल** का शिकार होते हैं उनका हल अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने कुछ यूँ तजवीज़ फ़रमाया :

एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के दरबार में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका वसल्लम ! मैं कुछ पूछना चाहता हूँ ?

फ़रमाया : हाँ, कहो। दरबार में उस वक़्त हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो भी मौजूद थे, इन्होंने हदीसे मुबारका तहरीर करके अपने पास रख ली, इसके बाद यह फ़रमान कन्ज़ुल उम्माल, मुस्नद अहमद में मनक़ूल हुआ।

अर्ज़ : या रसूलल्लाह मैं अमीर (मालदार) बनना चाहता हूँ ?

इरशाद : क़िनाअत (थोड़े पर सब्र) इख़्तियार करो, अमीर हो जाओगे।

अर्ज़ : मैं सबसे बड़ा आलिम बनना चाहता हूँ ?

इरशाद : तक़वा (परहेज़गारी) इख़्तियार करो आलिम बन जाओगे।

अर्ज़ : इज़्ज़त वाला बनना चाहता हूँ ?

इरशाद : मख़लूक़ के सामने हाथ फैलाना बन्द करो, बा इज़्ज़त रहोगे।

अर्ज़ : अच्छा आदमी बनना चाहता हूँ ?

इरशाद : लोगों को नफ़ा पहुँचाओ।

अर्ज़ : आदिल (इन्साफ़ करने वाला) बनना चाहता हूँ ?

इरशाद : जिसे अपने लिये अच्छा समझते हो, वही दूसरों के लिये पसन्द करो।

अर्ज़ : ताक़तवर बनना चाहता हूँ ?

इरशाद : अल्लाह पर तवक्कुल (मुकम्मल भरोसा) करो।

अर्ज़ : अल्लाह के दरबार में ख़ास दर्जा चाहता हूँ?

इरशाद : कसरत से ज़िक्र करो।

अर्ज़ : रिज़्क़ में कुशादगी (तरक़्क़ी) चाहता हूँ ?

इरशाद : हमेशा बा वुज़ू रहो।

अर्ज़ : दुआओं की मक़बूलियत चाहता हूँ ?

इरशाद : हराम न खाओ।

अर्ज़ : ईमान की तकमील चाहता हूँ ?

इरशाद : अख़्लाक़ अच्छा कर लो।

अर्ज़ : क़ियामत के रोज़ अल्लाह से पाक होकर मिलना चाहता हूँ ?

इरशाद : जनाबत (गुस्ल फ़र्ज़ होने) के बाद गुस्ल

कर लिया करो।

अर्ज़ : गुनाहों की कमी चाहता हूँ ?

इरशाद : कसरत से इस्तिग़फ़ार किया करो।

अर्ज़ : क़ियामत के रोज़ नूर (रोशनी) में उठना चाहता हूँ ?

इरशाद : ज़ुल्म करना छोड़ दो।

अर्ज़ : चाहता हूँ अल्लाह मुझ पर रहम करे ?

इरशाद : अल्लाह के बन्दों पर रहम करो।

अर्ज़ : चाहता हूँ अल्लाह मेरी परदापोशी फ़रमाए ?

इरशाद : लोगों की परदापोशी करो।

अर्ज़ : रुसवाई से बचना चाहता हूँ ?

इरशाद : ज़िना से बचो।

अर्ज़ : चाहता हूँ अल्लाह और उसके रसूल का महबूब बन जाऊँ ?

इरशाद : जो अल्लाह व उसके रसूल (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) का महबूब हो उसको अपना महबूब बना लो।

अर्ज़ : अल्लाह का फ़रमांबरदार बनना चाहता हूँ ?

इरशाद : फ़राइज़ का एहतिमाम करो।

अर्ज़ : एहसान करने वाला बनना चाहता हूँ ?

इरशाद : अल्लाह की यूँ बन्दगी करो जैसे तुम उसे देख रहे हो या जैसे वह तुम्हें देख रहा है।

अर्ज़ : या रसूलल्लाह ! क्या चीज़ गुनाहों से मुआफ़ी दिलाती है ?

इरशाद : आंसू, आजिज़ी और बीमारी।

अर्ज़ : क्या चीज़ दोज़ख की आग को ठन्डा करती है ?
इरशाद : दुनिया की मुसीबतों पर सब्र।
अर्ज़ : अल्लाह के ग़ज़ब को क्या चीज़ सर्द करती है?
इरशाद : चुपके चुपके सदक़ा और सिला रहमी
अर्ज़ : सबसे बड़ी बुराई क्या है ?
इरशाद : बद अख़लाक़ी और बुख़्ल (कन्जूसी)
अर्ज़ : सबसे बड़ी अच्छाई किया है ?
इरशाद : अच्छा अख़लाक़ तवाज़ो और सब्र।
अर्ज़ : अल्लाह के ग़ज़ब से बचना चाहता हूँ ?
इरशाद : लोगों पर ग़ुस्सा करना छोड़ दो।

786/92

रात को सोते वक़्त के अमलियात

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने एक मरतबा हज़रत अली कर्रमल्लाहो वजहहु से इरशाद फ़रमाया : ऐ अली ! रात को रोज़ाना पाँच काम करके सोया करो।

1) चार हज़ार दीनार सदक़ा देकर सोया करो।
2) एक कुरआन शरीफ़ पढ़कर सोया करो।
3) जन्नत की क़ीमत देकर सोया करो।
4) दो लड़ने वालों में सुलह कराकर सोया करो।
5) एक हज करके सोया करो।

हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह अम्र मुहाल है कब बन सकेंगे यानी यह अमल कैसे मुमकिन है।

हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि :

1) चार मरतबा सूरतुल फ़ातिहा यानी अलहम्दु शरीफ़ पढ़कर सोया करो इसका सवाब चार हज़ार दीनार सदक़ा देने के बराबर होगा।

2) तीन मरतबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ पढ़कर सोया करो एक कुरआने मजीद पढ़ने के बराबर सवाब होगा।

3) दस मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर सोया करो जन्नत की क़ीमत अदा होगी।

4) दस मरतबा इस्तिग़फ़ार (अस्तग़फ़िरुल्लाहा रब्बी मिन कुल्लि ज़म्बिंव व अतूबु इलैह) पढ़कर सोया करो दो लड़ने वालों में सुलह कराने के बराबर सवाब होगा

5) चार मरतबा तीसरा कलमा पढ़कर सोया करो एक हज का सवाब मिलेगा।

इस पर हज़रत अली कर्रमल्लाहो वजहहु ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम अब तो मैं रोज़ाना यही अमलियात करके सोया करूँगा।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हम सब को अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के

नअ़लैने पाक के सदक़े में ऊपर लिखे नेक आमाल पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

